जनवरी-२०१९ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

जनवरी-२०१९

हर एक पल और
कोई भी दिन,
होता है निश्चित
ही शुभ दिन।
कीजे अच्छे कार्य, सदा ही,
चित्त प्रसन्न रहे, जिस भी दिन।
सत्यार्थ प्रकाश, अपना कर देखो,
मलमास में फिर, मंगल होंगे दिन।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

**श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास**
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ८५

श्रेष्ठ क्वॉलिटी, उत्तम स्वाद,
एम.डी.एच. मसालों में है कुछ बात।
MDH मसाले
असली मसाले सच - सच
Chana masala (CHHOLE KA MASALA)
Garam masala
Peacock Kasoori Methi
Hygienic, Flavourful & Tasty
NET WT. 25g
Chunky Chat masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
Sambhar masala
Dal Makhani masala
Shahi Paneer masala
Pav Bhaji masala
Kitchen King (MIXED SPICES POWDER)
ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

**न्यास का मासिक मुखपत्र**

# सत्यार्थ सौरभ


**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**

महाशय धर्मपाल जी ( एम.डी.एच. )
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**

अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**

भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग**

नवनीत आर्य ( मो.9314535379 )

**व्यवस्थापक**

सुरेश पाटोदी ( मो.9829063110 )


| सहयोग ◆ | भारत | विदेश |
|---|---|---|
| संरक्षक | - 11000 रु. | $ 1000 |
| आजीवन | -1000 रु. | $ 250 |
| पंचवर्षीय | - 400 रु. | $ 100 |
| वार्षिक | - 100 रु. | $ 25 |
| एक प्रति | - 10 रु. | $ 5 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
**श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास**
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 31010201004l518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११९
पौष शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत्
२०७५
दयानन्दाब्द
१९४

# वाममार्ग की आहट-२

**January - 2019**


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।



विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 2000 रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 1000 रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 750 रु. |


समाचार २४
हलचल २५


०४ वेद सुधा
११ हमारा वास्तविक कद ...
१२ सत्यार्थप्रकाश पहेली- १/१९
१३ परमाणु विज्ञान
२० ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता-६
२१ आर्य समाज के भावी कार्यक्रम
२६ राम मंदिर
२८ सुहानी सर्दी
२९ जीवन चक्र
३० विविध सृष्टि ईश्वर की रचना



**स्वामी** श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | **वर्ष - ७ | अंक - ०८** | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

**प्रकाशक**
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

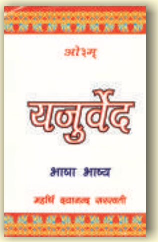


ओ३म्

# वेद सुधा

## प्रातःवन्दन

प्रातर्जितं भगमुग्रꣳहुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।। - यजु.३४।३५।।

अन्वयः- प्रातः जितं भगम् उग्रम् अदितेः पुत्रं वयं हुवेम, यः विधर्त्ता, यम् आध्रः चित् मन्यमानः (इत्याह), तुरः चित् राजाचित् यं भगं भक्षि इति आह।

अन्वयार्थः- (प्रातःजितं भगम् उग्रम् अदितेः पुत्रं वयं हुवेम) ब्रह्ममुहूर्त में जयशील, भजन करने योग्य, परम तेजस्वी, समस्त ब्रह्माण्ड को पवित्र करने वाले उस परमेश्वर का हम आह्वान करते हैं,(यः विधर्त्ता) जो सब लोक-लोकान्तरों को धारण करने वाला है, (यम् आध्रःचित् मन्यमानः) जिसको दरिद्र भी भजनीय , सेवनीय ऐश्वर्य मानता हुआ, दरिद्र ही क्या (तुरः चित् राजाचित् यं भगं भक्षि इति आह) धन-वैभव के प्रभाव से अत्यन्त शीघ्रकारी वा दुष्टों को दण्ड देने वाला बलवान् पुरुष और यहां तक कि ऐश्वर्यों और नानाविध सामर्थ्यों से युक्त राजा तक भी जिसको अपना भजनीय-सेवनीय-अद्वितीय ऐश्वर्य मानकर 'मैं सेवन करूं' ऐसा कहता है।

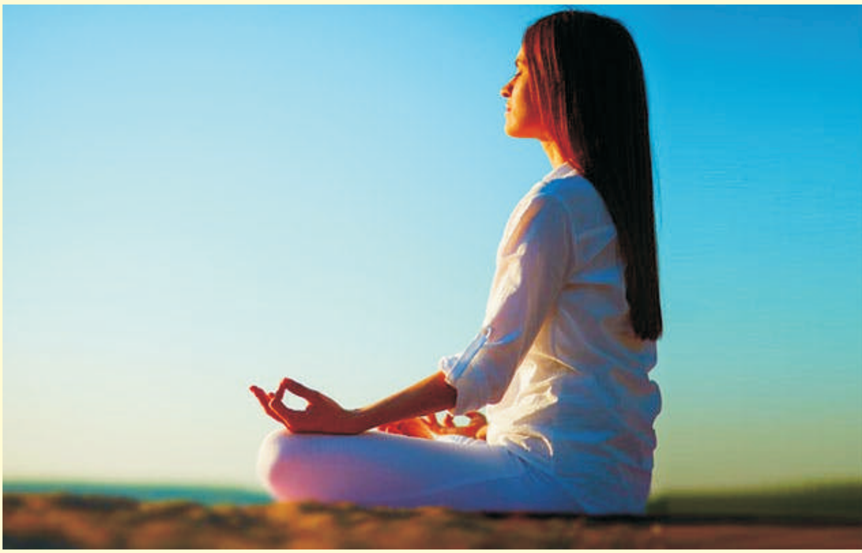

प्रातः समय की अनुपम शांत वेला में विजयशील, भजने योग्य, तेजोमय, अविनाशी, कारणरूप जगत् के रक्षक उस प्रभु का हम आह्वान करते हैं, जो सब जगत् का विशेषरूप से धारण करने वाला है, जिसे जहां धन- अन्न बल आदि से हीन दरिद्र अपना भजनीय, सेवनीय, इष्टदेव मानता हुआ स्मरण करता है वहां धन-वैभव और शक्ति से सम्पन्न होने से सब कर्मों में शीघ्रकारी और धन-अन्न-बल से सर्वप्रकार से सम्पन्न राजा तक भी जिसे भजनीय-सेवनीय और अभीष्ट फल का दाता मानता हुआ 'मैं इसका सेवन करूं, मैं इनकी उपासना करूं' ऐसा कहता है।

दरिद्र जिसे अपना बड़ा सेवनीय ऐश्वर्य मानकर भजता है, बड़े से बड़ा बलवान् कर्मशील भी और यहां तक कि राजा तक भी जिसे अपना अभीष्ट फल प्रदाता इष्टदेव परमैश्वर्य समझकर 'मैं इसको भजूं, मैं इसकी शरण में जाऊं' ऐसा कहता है, ऐसे उस विजयशील ऐश्वर्यों के परमस्रोत, भजनीय, तेजोमय, अविनाशी, मूलप्रकृति के सच्चे रक्षक प्रभु का प्रभातकाल की शुभ व शान्त वेला में ध्यान में हम आह्वान करें अर्थात् श्रद्धा-भक्ति और प्रेम से उसकी स्तुति-प्रार्थना एवं उपासना करें।

अथवा

यः विधर्त्ता (अस्ति) आध्रः चित्, तुरः चित्, राजाचित् यं मन्यमानः यं भगं भक्षि इति आह(तम्) प्रातःजितं भगम् उग्रम् अदितेः पुत्रं वयं हुवेम्।

अन्वयार्थः- जो सब जगत् का धारण करने वाला है, दरिद्र और धन-वैभव के कारण गतिशील समृद्ध मनुष्य एवं यहां तक कि राजा भी जिसको अपना इष्टदेव-उपास्यदेव मानता हुआ, जिस भजनीय प्रभु को 'मैं भी भजूं' ऐसा कहता है, ऐसे उस प्रातः ही उपासकों के मन को जीतने वाले, भजन द्वारा भजनीय और दुष्टों के लिए उग्रस्वरूप अदितिरूप सब प्रजा को पवित्र करने वाले प्रभु का हम आह्वान करते हैं।

साभारः वैदिक पुष्पाञ्जलि

आत्म निवेदन

# वाम मार्ग की आहट - 2

कहा गया कि धारा ४९७ में पत्नी को पति की संपत्ति की तरह समझा गया है। ठीक है असमानता वो भी लिंग के आधार पर तो बिलकुल नहीं होनी चाहिए। एडल्टरी से सम्बंधित कानून में यदि कोई तकनीकी गलती है तो उसमें सुधार करने के हम विरुद्ध नहीं हैं परन्तु 'सहमति की उपस्थिति' को ऐसा तत्व मान लेना कि वह सब नाजायज को जायज बना सकती है, यह मानना अनुचित ही नहीं पहले से ही अनैतिकता और अनाचार से जूझ रहे समाज को पतन के गड्ढे की ओर धकेल देना है। आश्चर्य है कि एक ऐसी मीडिया सेलीब्रिटी जिसे समाज को सही दिशा में ले जाने के कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए लिखतीं हैं कि जब तक "असहमति न हो तब तक आपके शयनकक्ष में सब कुछ जायज है।" मानव समाज में ये मापदंड उपयुक्त नहीं है। वस्तुतः जो किसी भी प्रकार के नियंत्रण के विरुद्ध हैं ऐसे समाज के नियामकों को 'समज' तथा 'समाज' के बीच का अंतर समझना होगा। 'समज' पशुओं के झुण्ड को कहते हैं जो केवल अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति से संचालित होते हैं। विवेक, संयम जैसे शब्द वहां मायने नहीं रखते। वहां क्या सही है क्या गलत यह कोई कसौटी नहीं है। अपने मतभेद तथा विरोधों का निस्तारण भी उनको अपनी अपनी शक्ति के अनुसार करना होता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' उनका आदर्श है इसीलिए अराजकता को 'जंगल का कानून' कह दिया जाता है।

परन्तु मानव समाज को धर्म (कर्तव्य) तथा विवेक अनुशासित करते हैं। मानव जीवन का सुनिश्चित लक्ष्य है, जिसे मानव योनि में ही प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए प्रत्येक कार्य को करने से पहले यह विचार करना आवश्यक है कि यह कार्य करणीय है या अकरणीय। जो करणीय है वही करना है, अन्यथा नहीं। यह करणीय मनुष्य की इच्छा या आकांक्षा के विपरीत भी हो सकता है पर फिर भी करना है और अकरणीय में मनुष्य की तीव्र रुचि हो सकती है फिर भी वह कार्य नहीं करना है। यह कैसे संभव हो सकता है? इसका सर्वोत्तम साधन तो आत्मसंयम बताया गया है। जब प्राप्य की उत्तमता का हृदय से विश्वास हो तब यह आत्मसंयम भी कठिन साधना के रूप में ही सही उतना दुष्कर नहीं लगता। आत्मसंयम की इस राह में दुष्प्रवृत्तियों को जड़ से कुचलना होता है। वेद कहता है –

**उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्व यातुमुत कोकयातुम्।**
**सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।।** - ऋ.८/४/२२

अर्थात् मोह, क्रोध, मात्सर्य, काम, अहंकार और लोभ को ऐसे कुचल डालो जैसे शिला पर पत्थर से कुचल दिया जाता है। एक और वेदमंत्र द्रष्टव्य है-

**अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।**
**अत्रा जहीमोऽशिवा येऽअसञ्छिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्।।** - यजु. ३५/१०

भावार्थ यह है कि जो भवसागर को पार करना चाहता है उसे काम, क्रोध, मद, मोह तथा लोभ जैसी दुष्प्रवृत्तियों से मुक्त हो जाना चाहिए क्योंकि ये सब अमंगल हैं दुखदायी हैं। मन में जब विषयों के प्रति आसक्ति उठती है तो रथ में जुटे घोड़ों की भाँति दो प्रकार की स्थिति होती है। गीता में इसका निदर्शन किया गया है। आत्मा ऐसे रथ का रथी है तथा इन्द्रियाँ घोड़े। अगर आत्मा आत्मसंयमी है तो पूर्ण अधिकार के साथ घोड़ों को नियंत्रित कर उसी दिशा में चलाता है जिसमें वह चाहता है और अगर ऐसा नहीं है तो आत्मा इन्द्रियों का दास बन जिधर वे घोड़े ले जाते हैं उसी दिशा में भागता है अर्थात् विषयों के पीछे भागता रहता है। ऐसे जीवात्मा का धर्म से सम्बन्ध कट जाता है क्योंकि धर्म के लक्षण आत्मानुशासन से ही सिद्ध होते हैं।

**धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः**
**धीर्विद्या सत्यमक्रोध दशकं धर्म लक्षणं।।**

स्पष्ट है कि अनियंत्रित और पतन के रास्ते पर धकेलने वाले विचारों पर उनके उठते ही अंकुश लगा देना आवश्यक है क्योंकि जैसे विचार होते हैं वैसे ही आचरण व्यक्ति करता है। विचारों के निर्माण में संस्कार आधारभूत होते हैं। संक्षेप में कहें तो संस्कार तीन स्थानों से आते हैं, प्रथम जन्म जन्मान्तर से संचित संस्कार, द्वितीय माता-पिता से आनुवंशिक रूप में प्राप्त संस्कार, तृतीय परिवेश से प्राप्त संस्कार। गंभीर चिंतन से ज्ञात होता है कि इन तीनों ही संस्कारों को अपेक्षित दिशा दी जा सकती है, परन्तु यहाँ हम केवल तीसरे आधान-स्थल की चर्चा करेंगे। हम जिस परिवेश में उठते बैठते हैं वे हमारे विचारों का निर्माण करते हैं इसमें तो शायद ही किसी चिन्तक का विरोध होगा। जिन बातों को समाज में बुरा माना जाता है उस ओर जाने से पहले व्यक्ति सौ बार सोचता है। अगर उस दिशा में विचार भटकते भी हैं तो कार्य में परिणिति से पूर्व ९५ प्रतिशत लोग उस भाव को दबा देते हैं और जो उस गलत कार्य को करता भी है वह भय, शंका, लज्जा के कारण चोरी छिपे करता है। मजे की बात यह है कि जो दुष्प्रवृत्तियों को दबा देने जितने नैतिक साहस के अभाव में दुष्कृत्य कारित तो कर देता है पर अंतरात्मा में उसे गलत ही मानता है इसीलिए चाहता है कि उसके बच्चे उस दिशा से विरत रहें। मद्यपान, नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले, चोरी-डकैती करने वाले, वेश्यालयों में जाने वाले इसी श्रेणी में आते हैं। एक सभ्य समाज की विशेषता को इंगित कर कहा गया है -

**मातृवत् परदारेषु , परद्रव्येषु लोष्टवत्।**
**आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति स पंडितः।।**

अर्थात् जो परायी स्त्रियों को माता के समान, पराये धन को मिट्टी के ढेले के समान और सभी प्राणियों को आत्मस्वरूप समझता है। वह पंडित है।

जब तक उक्त प्रकार की मान्यता वाला परिवेश रहेगा लोकलाज अपना कार्य करते हुए कईयों बल्कि अनेकों को सन्मार्ग पर रखेगी परन्तु जब पञ्च मकारों को वांछनीय बना दिया जावेगा

**मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च**
**एते पंच मकाराः स्युर्मोक्षदा हि युगे युगे।** - महानिर्वाण तंत्र

फिर कोई आशा शेष नहीं रह सकती। आज पुनः एक बार यही हो रहा है। गलत कार्य को गलत न मानने का वातावरण बनाया

जा रहा है। जबकि आवश्यक है कि गलत बातों को समाज में गलत माना जाता रहे। जिस दिन इस प्रकार के कृत्यों को सामाजिक/कानूनी स्वीकृति मिल गयी उस दिन भय, शंका लज्जा भी समाप्त हो जायेगी और समाज को पतन के रास्ते पर ले जाने वाले कृत्यों को कारित करने वालों की संख्या बढ़ती जायेगी क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, द्वेष आदि की ओर भागना सहज देखा गया है जबकि इनसे बचने के लिए सबल आत्मशक्ति की आवश्यकता है। अतः इनसे विशेष ध्यान देकर निरंतर बचते रहने का प्रयास करना होता है, प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण कर देखना होता है कि कहीं इन बुरे भावों ने अंतस में थोड़ा सा स्थान तो नहीं बना लिया है और ऐसा है तो उस बुरे विचार को अंकुरण के स्तर पर ही कुचल देना होता है।

दुर्भाग्य से सामजिक और कानूनी स्तर पर जिन लोगों ने समाज को दिशा देने की, न्याय देने की जिम्मेदारी उठा रखी है वे बिना विचारे भारतीय परिवेश में ऐसे महत्वपूर्ण परिवर्तन कर रहे हैं जिसकी वजह से बुराइयों को निर्दोष समझने की भूल की जा रही है।

उदाहरण के तौर पर भारत में विवाह की संकल्पना को लेते हैं। यह एकपत्नीव्रत तथा एक पतिव्रत की प्रतिज्ञा द्वारा पारस्परिक 'कमिटमेंट' को सर्वोपरि रखता है। विवाह संस्कार में पाणिग्रहण के अवसर पर छः तथा सप्तपदी में सात मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है। जिनमें प्रमुखतः

(१) पति के साथ वृद्धावस्था तक सुखपूर्वक रहने का संकल्प है।
(२) विवाह के उद्देश्य के रूप में सुसंतान की उत्पत्ति का संकल्प है।
(३) एक पतिव्रत तथा एकपत्नीव्रत का संकल्प है
(४) सदैव धर्मयुक्त कार्यों को ही करने का तथा एक दूसरे का अप्रियाचरण न करने तथा व्यभिचार से विरत रहने का संकल्प है।
(५) एक दूसरे से कभी कुछ न छिपाने का संकल्प है, सदा एक दूसरे का प्रियाचरण करने तथा एक दूसरे को सुखी रखने का संकल्प है।
(६) जरावस्था तक सब प्रकार से साथ निभाने का संकल्प है।

गृहस्थाश्रम को स्वर्ग बनाने हेतु समस्त आवश्यक तत्वों का उल्लेख अत्यंत विशद रूप में विवाह संस्कार के मन्त्रों में आता है जिसे अत्यंत ही संक्षेप में हमने यहाँ उपस्थित किया है। ये संकल्प पति तथा पत्नि दोनों के हैं। दोनों गृहस्थ रूपी गाड़ी के एक समान पहिये हैं। अतः फेमिनिस्टों को झंडा उठाने का यहाँ अवकाश नहीं है। ऐसे संकल्पों का स्मरण गलत दिशा में जाने से रोकने में काफी हद तक साधक होता है। फिर भी फिसलन हो सकती है। तब सामाजिक लोकलाज और कानून का भय काफी हद तक फिसलने की गति को अवरुद्ध करता है। सबसे बड़ी बात गलती करने वाला पक्ष उस फिसलन को गलत तो मानता ही है। धारा ४९७ में यदि कोई तकनीकी कमी है, और जैसा फेमिनिस्टों द्वारा कहा जा रहा है कि यह धारा लिंग स्तर पर विभेदकारी है तो उसकी इस कमी को दूर करना चाहिए न कि व्यभिचार को अपराध मानने संबंधी धारा को ही हटा देना।

वस्तुतः व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर आज के बुद्धिजीवियों द्वारा कई ऐसे कार्यों का समर्थन किया जा रहा है जो मनुष्य को उच्छृंखल बनाकर सभी नैतिक मर्यादाओं को ध्वस्त कर देते हैं, जैसे 'लिव इन' को सपोर्ट करना। गंभीर चिंतन बताता है कि 'लिव इन' के मूल में केवल और केवल काम की उपासना है। विवाह के एक भी कर्तव्य के लिए वहां अवकाश नहीं है। जब तक चाहें साथ रहें, ऐश करें , जब एक दूसरे से ऊब जायं तो दूसरे पार्टनर के साथ रहने लगें। 'लिव इन' उतना टेम्परेरी न लगे और उसमें भी बंधन महसूस हो तो 'डेटिंग' का प्रबंध है, एकाधिक बार काम-साधना हेतु। आश्चर्य यह है कि महिलाएं भी इसे अपने अनुकूल मान रहीं हैं जबकि इन व्यवस्थाओं में उन्हीं का शोषण सबसे अधिक होता है। विवाह में शारीरिक आकर्षण

दोयम दर्जे पर है प्रेम प्रथम सोपान पर जबकि उक्त आधुनिक व्यवस्थाओं में इसका उलट है, जो कम से कम नारी मन के अनुकूल नहीं है। इसीलिए उक्त तथाकथित व्यवस्थाओं को अभी बहुत समय नहीं हुआ है फिर भी इनको स्वाभाविक मानने वाले वर्ग से आत्महत्याओं के जो समाचार आ रहे हैं वे समाज शास्त्रियों को चेतावनी देने वाले हैं।

जैसा हमने कहा कि लोभ, मोह, अहंकार, कामवासना सभी मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करते हैं परन्तु आत्मसंयम इस फिसलन से व्यक्ति को रोकता है। आत्मसंयम सिखाने में माता-पिता आचार्य के दिए संस्कार काम आते हैं। परन्तु साथ ही कानून और दंड का भय भी प्रभावी रूप से उसे गलत मार्ग पर जाने से रोकता है। अतः इस क्षेत्र में कानूनों की महती आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सीमा क्या हो यह सदैव विवादित रहा है। पर हमें इसमें महर्षि दयानंद का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग लगता है। जिसके दो मुख्य चरण हैं

(१) प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

(२) प्रत्येक सर्वहितकारी नियम में सब परतंत्र रहें।

व्यक्ति तभी तक स्वतंत्र है, उसकी निर्बाधता तभी तक है जब तक कि उसके द्वारा कहा जा रहा तथा किया जा रहा, किसी अन्य को प्रभावित नहीं करता।

उदाहरण के रूप में एक व्यक्ति कार चला रहा है वह ४० की स्पीड पर चलाये या ६० पर, यह उसका अपना विषय है, क्योंकि उससे किसी अन्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अतः वह स्वतन्त्र है। परन्तु जैसे ही वह ऐसी स्पीड पर कार चलाता है अथवा मद्यपान करके कार चलाता है जिससे कार अनियंत्रित होकर उसे स्वयं को अथवा अन्य राहगीर को भी हानि पहुंचा सकती है तो उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कानून द्वारा सीमित कर दिया जाता है। आपने अनेक खतरनाक मोड़ वाले स्थलों पर अथवा आबादी वाले स्थलों पर गति नियंत्रक सूचना देखी होगी। वह इन्हीं कारणों से होती हैं कि चालक किसी अन्य को अथवा अपने को हानि न पहुंचा सके। अगर आप गतिसीमा का अतिक्रमण करेंगे तो कानूनन अपराध होगा और आपको तदनुरूप दण्डित किया जावेगा।

हेलमेट का उदाहरण लीजिये। सब कहते हैं कि वे हेलमेट पहनें या नहीं, यह उनकी मर्जी है, इससे तो किसी अन्य को भी कोई फरक नहीं पड़ता। परन्तु कानून इस दलील को नहीं मानता। हेलमेट न लगाना आपके लिए हितकारी नहीं है अतः कानून द्वारा आपको विवश किया जा रहा है कि आप हेलमेट लगावें, नहीं तो आप पर जुर्माना किया जाता है। सैकड़ों सहस्रों उदाहरण ऐसे दिए जा सकते हैं जहां समाज तथा कानून द्वारा लोकहित में तथा आपके स्वयं के हित में आपकी स्वतंत्रता को बाधित किया जाता है।

आत्महत्या इसी से अपराध है। इच्छामृत्यु इसी से अभी तक स्वीकृत नहीं हो पायी है। फिर समाज और परिवार को तोड़ देने, अनेकों के जीवन को सदा के लिए अँधेरे में फैंक देने वाली 'लिव इन' तथा व्यभिचार की स्थितियों को आप कैसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर खुली छूट दे सकते हैं? १०० रुपये की संविदा के उल्लंघन पर तो आप कानून बनाना और अपराधी को दंड देना उचित मानते हैं, अनेक प्रकार के विश्वासघात को सजा के अंतर्गत मानते हैं पर विवाह के अवसर पर जो जिन्दगी भर के लिए कांट्रेक्ट ( अगर लीगल भाषा में ही परिभाषित करना अपेक्षित है तो) किया जाता है, जिसका उल्लंघन केवल पति-पत्नी ही नहीं परिवार के प्रत्येक सदस्य को महा दुःख के सागर में डुबो देता

है उसे कानूनन छूट देते हैं यह दोहरा मापदंड क्यों? 'लिव इन' सम्बन्ध,समलैंगिकता और व्यभिचार का अनस्तित्व किसी भी समाज के लिए हितकारी है इसलिए इस सन्दर्भ में प्रत्येक व्यक्ति परतंत्र रहे यही कल्याणकारी है।

समाचार पत्र में देखा था कि किन्ही जज साहब ने धारा ४९७ के अपने निर्णय में मनुस्मृति के दो श्लोकों को उद्धृत किया था जिनमें एक प्रसिद्ध श्लोक उद्धृत कर रहे हैं।

**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।**
**यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफला: क्रिया:।।**

आज के जज साहब संसार के प्रथंम विधान का इतना सम्मान करते हैं यह जानकर प्रसन्नता हुयी परन्तु उसी विधान अर्थात् मनुस्मृति के उस श्लोक को क्यों भुला दिया जिसमें व्यभिचारी चाहे वह स्त्री हो या पुरुष उसे दंड का विधान है-

**भर्तारं च लंघयेद्यातु स्त्री स्वज्ञाति गुणदर्पिता।**
**तां श्वभि: खादयेद्राजा संस्थाने बहुसंस्थिते।।**
**पुमांसं दाहयेत्पापं शयने तप्त आयसे।**
**अभ्यादध्युश्च काष्ठानि तत्र दह्येत पापकृत।।**

अर्थात् व्यभिचारिणी की सजा उसे कुत्ते से कटवाकर मार दिया जाय,तो व्यभिचारी की सजा लाल तप्त लोहे के पलंग पर लेटाकर मार दिया जाय। ये दोनों सजा सार्वजनिक हों। तो व्यभिचार पर अंकुश लगाने हेतु कानून आवश्यक है। समाज को पतन के रास्ते पर धकेल देने वाले कार्य को आप खुली छूट नहीं दे सकते। यौन संबंधों की उन्मुक्तता के समक्ष खड़ी सभी प्रकार की बाधाओं को गत समय में धीरे धीरे समाप्त कर ऐसा वातावरण बना दिया है कि आज जो सर्वे आ रहे हैं उन्हें पढ़कर हम हमारी आगामी पीढ़ी के भविष्य को लेकर अत्यधिक चिंतित हैं। जी हाँ स्कूली स्तर पर ही इस क्षेत्र में खुलापन और उच्छृ्ंखलता इस कदर बढ़ गयी है कि माता-पिता की रातों की नींद उड़ गयी है।

तनिक विचार करें -अगर व्यक्ति लोभ को वश में नहीं कर पाता है तो तद्जनित चोरी,डकैती, रिश्वतखोरी को रोकने के लिए आप कानून बनाते हैं या नहीं? अहंकार और क्रोध की प्रवृत्ति को यदि व्यक्ति नियंत्रित नहीं कर पाता है तो तद्जनित हिंसा को रोकने के लिए हमने कठोर से कठोर कानून बनाए हैं या नहीं? फिर 'काम' को नियंत्रित न कर पाने के कारण अनेक प्रकार की रोके जा सकने वाली समस्याओं के निवारण से 'वयस्क सहमति' का आधार लेकर हम क्यों बचना चाहते हैं? और अगर वयस्क सहमति ही आधार है तो फिर हिन्दुओं में बहु विवाह अपराध क्यों? अगर एक पुरुष और दो अथवा उससे अधिक महिलायें विवाह कर पूर्ण सहमति से साथ रहना चाहते हैं तो अथवा इससे उलट एक महिला तथा कई पुरुष रजामंदी से विवाह करना चाहते हैं तो फिर, यह अपराध क्यों? विवाह के अवसर पर दो परिवार पूर्ण सहमति से दहेज लेना-देना चाहें तो अपराध क्यों?

अगर एक दम्पति सहमति से दो से ज्यादा बच्चे पैदा करना चाहे तो उन्हें सरकारी सेवाओं तथा अन्य अनेक सुविधाओं से

वंचित क्यों किया जाय? इसलिए न कि जनसंख्या जो कि एक जबरदस्त समस्या है, को हम नियंत्रित करना चाहते हैं तो फिर टूटते परिवार, बिखरते रिश्ते तथा अनेक अपराधों के जन्मदाता व्यभिचार को क्या हम स्वागतयोग्य मानते हैं जो उसके लिए उर्वरा भूमि तैयार कर रहे हैं? जैसा हमने कहा किसी भी समाज में, समाज में भी क्यों परिवार में भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता असीमित नहीं हो सकती। जैसे ही अन्य व्यक्ति की उपस्थिति होती है मर्यादा का आरोपण आवश्यक है। परिवार की बात करें तो एक व्यक्ति अपने बेडरूम में क्या पहनता है या नहीं पहनता यह उसकी इच्छा है, वह स्वतन्त्र है (यद्यपि पूर्ण वस्त्रविहीन होना अन्य प्रकार से उसके स्वयं के लिए हितकारी नहीं है अत: यहाँ भी मर्यादा का आरोपण होना चाहिए) परन्तु ज्योंही वह अपने कमरे से बाहर कदम रखता है तो परिवार के अन्य सदस्य की उपस्थिति उस पर शालीनता की मर्यादा का आरोपण कर देती है, तो बाहर जब वह समाज में, बाजार आदि सार्वजनिक स्थलों में जाता है तो

निश्चित रूप से पहनावे, बातचीत तथा अन्य व्यवहारों में उसे शिष्ट होना ही होगा क्योंकि यह पशुओं का 'समज' नहीं विवेकशील मानवों का 'समाज' है। 'मेरी टांग मैं जिसे चाहूँ दिखाऊँ, मैं कैसे भी वस्त्र पहनूँ जिसे पसंद न हो वह अपनी आँखें बंद करले' जैसे जुमले भारतीय संस्कृति के अनुरूप तो कदापि नहीं हैं यह पाश्चात्य देशों का अन्धानुकरण मात्र है, जो हमें लाभ नहीं गंभीर हानि पहुंचा रहा है।

हमने उन संस्कारों की बात की थी जो परिवेश में जन्म लेते हैं। इनका मनुष्य के निर्माण में बहुत बड़ा हाथ होता है। क्या चिंतन करने पर यह नहीं लगता कि आज होश संभालते ही घर में लगे टेलीविजन पर आने वाले कार्यक्रमों, मोबाइल, पत्र-पत्रिकाओं, सांस्कृतिक आयोजनों के नाम पर होने वाले आयोजनों, यहाँ तक कि धार्मिक पर्वों के रूप में किये जाने वाले आयोजनों के बदलते स्वरूप ने, सहशिक्षा के चलते विद्यालय और कालेज में पैर पसारती उन्मुक्तता और सबसे बढकर प्रत्येक किशोर की अबाधित पहुँच के अन्दर लेपटोप और मोबाईल पर मुफ्त में उपलब्ध अश्लीलतम पोर्न सामग्री ने अर्थात् 'इनपुट' के जितने भी साधन हैं उन सब के कारण 'स्वच्छंदता' 'काम' 'लालच' और 'हिंसा' का जो तांडव हो रहा है, उसका निराकरण करने की ताकत कितने संयमी लोगों में हो सकती है? इनकी संख्या अत्यंत कम होगी। यह समझना ज्यादा कठिन नहीं है कि विचारों का निर्माण उक्त प्रकार के 'इनपुटों' से ही होता है। अभी हाल में इस बात की पुष्टि उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय की डिवीजन बैंच के एक निर्णय ने की। देहरादून के एक स्कूल में १० वीं की छात्रा के साथ उसी के चार साथी छात्रों ने गैंगरेप किया। जाँच के दौरान अवयस्क आरोपियों ने स्वीकार किया कि दुष्कृत्य से पूर्व उन्होंने पोर्न सामग्री देखी थी। माननीय न्यायालय ने केन्द्र सरकार को कहा कि वे ३१ जुलाई २०१५ को जारी नोटीफिकेशन, जिसमें इन्टरनेट सर्विस प्रोवाइडर्स को पोर्न-बेन हेतु निर्देश थे, का सख्ती से पालन करवावे अन्यथा उनके लाइसेन्स निरस्त करे। यहाँ अफसोस इस बात का है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर पूर्व में उच्चतम न्यायालय ने 'पोर्न-बेन' से मना कर दिया था।

क्या कारण है कि जिस समलैंगिकता की आज सर्वत्र धूम मची है, उच्चतम न्यायालय ने जिसे हरी झंडी दिखा दी है कुछ वर्ष पूर्व हम उसके बारे में कितना सुनते थे? आप कहेंगे कि इसका कारण था कि अपराध में परिगणित होने के कारण वे इस तथ्य को छिपाते थे। बात ठीक भी है। न केवल कानून, समाज की नजरों में भी नीचे गिर जाने का भय था। परन्तु हम यहाँ निवेदन करना चाहते हैं कि उक्त वर्णित भयावह वातावरण में यौनिक लिबर्टी ने समलैंगिकों की संख्या में अभिवृद्धि की है। ये इनपुट इस बढ़ोतरी के मुख्य कारक हैं। इन 'इनपुटों' के कारण कामोत्तेजना के क्षणों में सहज उपलब्धता के कारण समलैंगिकों की संख्या में तेजी से अभिवृद्धि हुयी है। अतः उक्त 'इनपुटों' पर यदि शीघ्र नियंत्रण कर उन्हें सही दिशा नहीं दी गयी तो अकल्पनीय भयंकर परिणाम सामने होंगे। हम पुनः जोर देना चाहेंगे कि प्राकृतिक रूप से समलैंगिक रुझान रखने वालों से कहीं अधिक इस वर्ग में जानबूझकर,पुराने से ऊबकर, नवीन-नवीन में सुख तलाशने वालों की जमात है। मानव शरीर में प्रत्येक अंग का कार्य निर्धारित है। उसी क्रम को बनाए रखना मानव समाज के लिए हितकारी है। जिस अंग का जो कार्य नियत है उससे वही कार्य लेना व्यवस्था बनाए रखता है,शरीर को निरोगी रखता है। इससे हटकर या तो आप अन्यथा कर ही नहीं पायेंगे और करेंगे तो व्यर्थ होने के साथ साथ नाना प्रकार के रोगों को जन्म देने वाला होगा। नए से नए अनुभव करने वाले कामासक्तों द्वारा उक्त व्यवस्था का उल्लंघन उनके व समाज के लिए घातक ही है। अप्राकृतिक संबंधों को महिमामंडित करके हम समाज को पतन के गर्त की ओर धकेल ही नहीं रहे, विवाह नामक पवित्र सम्बन्ध और उसके उद्देश्य को बर्बाद कर रहे हैं। क्या आप जानते हैं मनुष्य जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य क्या है ? वेद इसका उत्तर देता है-'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्' अर्थात् मनुष्य बनो और मानवता से युक्त संतान का निर्माण करो' और उपरोक्त सभी व्यवस्थाएं और निर्णय वेदादेश अर्थात् परमेश्वर के आदेश के विपरीत ले जा रहे हैं। इस पर गंभीर चिंतन करने की आवश्यकता है। ऐसा हमारा निवेदन है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ६३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

मनुष्य की लंबाई या उसका क़द उसके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है इसमें संदेह नहीं। लंबे क़द वाले व्यक्ति का न केवल बाह्य व्यक्तित्व ही आकर्षक होता है अपितु लंबे क़द वाले व्यक्ति शारीरिक रूप से भी अपेक्षाकृत सुदृढ़ व आत्मविश्वास से भरपूर पाए जाते हैं। इसीलिए छोटे क़द वाले व्यक्तियों का कभी-कभी हीनता की भावना से ग्रस्त हो जाना स्वाभाविक ही है। इस हीनता से उबरने के लिए वे अपना क़द बढ़ाने के प्रयास में क्या कुछ नहीं करते? कोई खानपान में बदलाव के द्वारा क़द बढ़ाने की फ़िराक में रहता है तो कोई व्यायाम या दवाओं के द्वारा इसके उपचार में लगा रहता है। बाज़ार भी इस स्थिति

# हमारा वास्तविक क़द हमारे आचरण से निर्धारित होता है न कि शरीर की लंबाई से

– सीताराम गुप्ता

से लाभ उठाने में पीछे नहीं। लाखों-करोड़ों का व्यवसाय हो रहा है लेकिन क़द बढ़ाने में सफलता कितनों को मिलती है? बहुत कम या नगण्य को ही। इसका क्या कारण हो सकता है? वास्तव में हम न तो ये जानते हैं कि क़द वास्तव में होता क्या है और न उसे बढ़ाने के सही तरीक़े ही जानते हैं।

हमारा क़द हमारे बाह्य व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है इसमें संदेह नहीं लेकिन हमारा बाह्य व्यक्तित्व हमारे समग्र व्यक्तित्व का बहुत छोटा हिस्सा होता है जो मुश्किल से उसके दसवें हिस्से के बराबर होता है। इस प्रकार से हमारा शारीरिक क़द भी उसी अनुपात में कम महत्त्व ही रखता है। हमारा वास्तविक क़द हमारे आंतरिक व्यक्तित्व पर निर्भर करता है जो हमारे समग्र व्यक्तित्व का नब्बे प्रतिशत से भी अधिक होता है। प्रश्न उठता है कि हमारे आंतरिक

व्यक्तित्व के वे कौन से तत्त्व हैं जो हमारा वास्तविक क़द निर्धारित करते हैं। हमारी आदतें व व्यवहार ही वो तत्त्व हैं जो हमारे वास्तविक क़द को निर्धारित करते हैं। जब हम कहते हैं कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी व्यक्ति का बहुत ऊँचा क़द है तो हम उसके शरीर की लंबाई की नहीं अपितु उसके महत्त्व, योगदान व गुणों की बात कर रहे होते हैं।

यदि हममें अच्छी आदतें हैं तो स्वाभाविक रूप से लोग हमें पसंद करेंगे और लोग हमें पसंद करेंगे तो हमारा क़द ऊँचा होगा। इतिहास में अनेक ऐसे महान् व्यक्ति हुए हैं जिनका न तो बाह्य व्यक्तित्व ही बहुत अधिक आकर्षक था और न क़द ही लेकिन हम उनको उनके बाह्य व्यक्तित्व अथवा क़द के कारण नहीं अपितु समाज में उनके गुणों व योगदान के कारण जानते हैं व उनके प्रति सम्मान व श्रद्धा रखते हैं। महात्मा गांधी अथवा लाल बहादुर शास्त्री ऐसे ही महान् व्यक्ति हुए हैं। उनका वास्तविक क़द इतना अधिक था कि

लोगों को उनके शारीरिक क़द के बारे में विचार करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी।

हम सबके जीवन में ये होता है कि हम अपने बाह्य क़द को लेकर तो चिंतित रहते हैं लेकिन वास्तविक क़द को लेकर नहीं। बहुत छोटी-छोटी बातें होती हैं जिनसे हमारा समग्र व्यक्तित्व विकसित होकर हमारा वास्तविक क़द बहुत बड़ा हो जाता है। इसमें हमारा दृष्टिकोण बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। हम अपने लिए नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए क्या करते हैं और लोगों के प्रति हमारा व्यवहार अथवा हमारा आचरण कैसा है इससे हमारा वास्तविक क़द निर्धारित होता है। हमारे व्यवहार में शिष्टाचार का बहुत अधिक महत्त्व होता है। यदि हम लोगों का सम्मान करना और रखना जानते हैं तो सचमुच हमारा क़द बहुत ऊँचा हो जाता है। जो लोग हमेशा छिद्रान्वेषण अथवा दोषारोपण के द्वारा दूसरों को नीचा दिखाने में लगे रहते हैं उन्हें कौन पसंद करेगा चाहे उनका बाह्य व्यक्तित्व अथवा जिस्मानी

क़द कितना ही आकर्षक व उन्नत क्यों न हो?

लोग पहले हमारे बाह्य व्यक्तित्व से प्रभावित होकर हमारी तरफ आकर्षित होते हैं लेकिन यदि हम व्यवहारकुशल नहीं हैं और हमारा आचरण दोषपूर्ण है तो लोग हमसे दूर होते चले जाएँगे। वास्तविक क़द उस व्यक्ति का ही ऊँचा होता है जो दूसरों को महत्त्व देना और उनका सम्मान करना जानता है। जब भी कोई व्यक्ति किसी के सम्मान में खड़ा हो जाता है तो उसका अपना क़द सचमुच बड़ा हो जाता है। यक़ीन न हो तो बैठे हुए और किसी के सम्मान में खड़े हुए व्यक्ति का क़द मापकर देख लीजिए अंतर स्पष्ट हो जाएगा। व्यक्ति के स्वभाव की सरलता व आचरण की शुद्धता निश्चित रूप से उसके क़द में वृद्धि करने में सहायक होती है। हम समाज व लोगों के लिए कितने उपयोगी हैं इसका भी हमारे क़द से गहरा संबंध है।

कबीर ने ग़लत नहीं कहा जब ये कहा कि खजूर के पेड़ की तरह बड़ा अर्थात् बहुत लंबा होना निरर्थक है क्योंकि उससे न तो राहगीर को छाया ही मिल पाती है और न उसके फल ही आसानी से प्राप्त हो सकते हैं। अटल जी ने भी अपनी एक कविता में कहा है कि मुझे इतनी ऊँचाई नहीं चाहिए जिससे मैं लोगों को गले न लगा सकूँ। जो हर हाल में लोगों को गले लगाने की इच्छा को सर्वोपरि मानता हो उसका क़द ही वास्तव में सर्वोच्च होता है। और जब कोई व्यक्ति खड़ा होकर दूसरों के सामने झुकता है, उनका सम्मान करता है, उन्हें महत्त्वपूर्ण बनाने का अवसर प्रदान करता है तो उसका क़द और भी अधिक बढ़ जाता है। जिनकी कमर और गर्दन में लोच होती है, जो झुकना जानते हैं और आसानी से झुक सकते हैं उनका क़द भी वास्तव में बहुत बड़ा हो जाता है।

क़द उस इंसान का बड़ा होता है जो अपने से अधिक दूसरों की परवाह करता है। क़द उस शख़्स का बड़ा होता है जो हर हाल में घर आए मेहमान का यथोचित स्वागत करने को उत्सुक व तत्पर रहता है। जो महत्त्वहीन व क्षुद्र बातों को नज़रअंदाज़ कर सके, जिसके मन में सहिष्णुता व विरोधी के लिए भी थोड़ा स्थान हो और जो विषम परिस्थितियों में भी हाथ आगे बढ़ा सके वही सचमुच क़द्दावर शख़्स है। उससे बड़ा छोटे क़द वाला और दरिद्र इस दुनिया में कोई नहीं हो सकता जो बेचारा किसी के अभिवादन का यथोचित उत्तर भी न दे सके। मधुर व सार्थक संबंधों के विकास के लिए भी इससे अच्छा अन्य कोई उपाय अथवा उपचार नहीं। अपने व्यवहार में उत्कृष्टता लाकर हम अपने क़द को सचमुच बहुत ऊँचा कर सकते हैं इसमें संदेह नहीं।

पूरा नाम–

चलभाष–

## सत्यार्थप्रकाश पहेली- १/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

**रिक्त स्थान भरिये– सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। ( अष्टम समुल्लास पर आधारित )– पुरस्कार प्राप्त करिये**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | र १ | १ | त्मा | ■ | २ | २ प्र | | २ द्ध | ■ |
| ३ | ३ ख | ३ | ■ | ४ | ज | ■ | ५ | ५ | प्ति ५ |
| ६ द | ६ | ■ | ७ | ७ पा | ७ | ७ | का ७ | ७ | ण ७ |

**संकेत ( बाएँ से दाएँ ) ऊपर से नीचे न भरें।**

१. मकड़ी के शरीर से तन्तु निकलता है यह किसकी अद्‌भुत रचना है?

२. प्रलय में जगत् कैसा रहता है?

३. आंख के होने में क्या प्रयोजन है?

४. बीज पहिले था या वृक्ष?

५. प्रलय में जीव किस अवस्था में होते हैं?

६. जगत् को बनाने में परमात्मा का कौनसा एक गुण प्रकट होता है?

७. किसके गुण-कर्म-स्वभाव कार्य में आते हैं?

### सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११/१८ का सही उत्तर

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. परमात्मा | २. तीन | ३. ब्रह्म | ४. परमेश्वर |
| ५. अंधकार | ६. प्रकृति | ७. ऋग्वेद | ८. अनादि |

**"विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"**

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ फरवरी २०१९

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

# परमाणु विज्ञान और महर्षि दयानन्द सरस्वती

सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान के निर्झर का मधुमय उत्स=कुआँ वेद ही है। यह सृष्टि का यथार्थ अनुभूत सत्य है। मेरे जीवन पर इन विचारों का पर्याप्त ऋण है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि ज्ञान के मधुमान् महासमुद्र की एक बूँद ही मानव को यदि प्राप्त हो जाए तो जीवन का साफल्य है। आत्मा में ज्ञान का प्रकाश करते रहने के लिए, अज्ञान और दरिद्रता को दूर करते रहने के लिए, विज्ञान धन देते रहने के लिए परमेश्वर ही की कामना करने वाले उसकी आज्ञा में वर्तमान विद्वान् आप्त महर्षि दयानंद के साथ समागम में परमात्मा प्रकाशित हुआ, वैसे ही मुझमें महर्षि प्रकाशित है। वह श्रुतियों का उद्धारक इस युग में नई जागृति का रक्षक है, घने अज्ञान तिमिर को दूर करने के लिए एक ज्ञान सविता है, समाज के उद्धार के लिए निज वपु-बुद्धि-विभव को समर्पित कर त्रिदिव सुख भोगी विजयी हुआ। यही कारण था कि उस महर्षि ने अपने नाम के अनुकूल दयामय आनन्द की वृद्धि कर अपने सुन्दर नाम के आगे समस्त वेदार्थ पटीयसी=जानने वाली सरस्वती को सदा शोभित किया। वह हजारों में अकेला, लाखों में अकेला, करोड़ों में अकेला, दुनियाँ के अरबों मनुष्यों में अकेला दिखाई देता है। इसका कोई साथी नहीं था, बस साथी था तो केवल भगवान्। उसी का साहस था जो सब वेद-विरोधियों का सामना करते हुए वेद का सच्चा अर्थ समझने का सामर्थ्य दे गया।

इस पुस्तक में उस महर्षि के ही परमाणु-विषयक विचारों की प्रतिफलित ज्योति की रश्मियाँ ही सग्रंहीत हैं। उन्हीं ज्ञान-रश्मियों के आलोक से परमाणुओं का लोक प्राण जगमगा उठा है। जिनको आज के वैज्ञानिकों का सूक्ष्मदर्शिका यन्त्र अपनी पकड़ में नहीं ला सका है। सृष्टि का जो अव्यक्त मूल है उसे तत्=इन्द्रियों से अग्राह्य परोक्ष कहा जाता है तो यह विश्व एतत्=प्रत्यक्ष है। उस तत् की कोई मात्रा नहीं। उसकी ही मात्रा=सीमा या इयत्ता से विश्व बनता है। पंचभूतों के पंचगुणों को उस मूल अव्यक्त की तन्मात्रा कहा जाता है। शब्द पहली तन्मात्रा है। शब्दराशिमय जो वेद है, वह तन्मात्रा के धरातल पर भौतिक और सीमित है। किन्तु उसके पीछे जो ज्ञान की समष्टि है, वह अव्यक्त, अखण्ड और असीम है। उसकी कोई मात्रा नहीं। वह दिव्यवाक् है। जो दिव्य है उसे ही अमृत कहते हैं। जो पंचभूतों में या उनकी तन्मात्राओं में परिच्छिन्न हो जाता है, वह मर्त्य हो जाता है। वह देश-काल, नाम-रूप, जन्म और विनाश के आधीन है। इस दृष्टि से आकाश की जो शब्दार्थमयी वाक् है, उसे मर्त्या-वाक् कहते हैं। किन्तु इस भौतिक आकाश का जो स्रोत है, उसे परमाकाश या परमव्योम कहते हैं। अनादि अनन्तमूल वेद का उद्‌गम वही परम व्योम है। वही परावाक् या अमृत वाक् कही जाती है। इसे ही ब्रह्म सरोवर कहते हैं। वही बुद्धि का अव्यक्त सर है। इसीलिए बुद्धि को ज्ञान कहते हैं। इसी

सरोवर का जल प्रत्येक व्यक्ति के भीतर जाता है तब मानस कहलाता है। इसीलिए जैसे रथ के पहिए के बीच के काष्ठ में अरा लगे रहते हैं वैसे मन में ऋक्, यजुः, साम और अथर्व सब ओर से स्थित हैं जिसमें प्राणियों का समग्र पदार्थ सम्बन्धी ज्ञान सूत में मणियों के समान संयुक्त है, ऐसा वेद में कहा है।

हमारी इस उपज्ञा को महान् वैयाकरण और व्याकरण आगम के उद्धारक भर्तृहरि के वाक्य पदीय के आगमकाण्ड के एक श्लोक से महान् बल मिलता है।

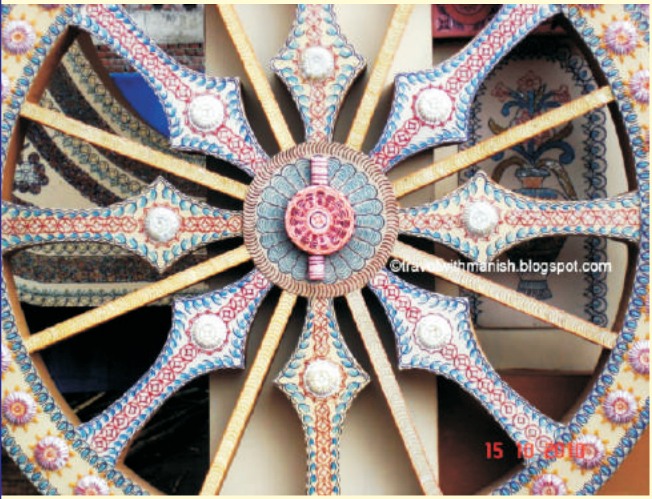


**अनादि-निधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।**
**विवर्त्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः।।**

आदि और निधन रहित अविनाशी शब्दतत्त्व रूप जो ब्रह्म है, वह अर्थ के भाव से विवर्त्त को प्राप्त होता है। उसी से जगत् की प्रक्रिया निकली। इसी बात को महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास महाभारत के शान्तिपर्व में इस प्रकार लिखते हैं।-

**अनादि निधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयंभुवा।**
**आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः।**

आदि और निधन रहित नित्य वाक् स्वयंभू ब्रह्म ने उत्सृष्ट की। आदि में वेदमयी दिव्यवाक् थी, उसी वाक् से संसार की सब प्रवृत्तियाँ हुईं अर्थात् संसार में सब कुछ उसी से उत्पन्न हुआ। उपर्युक्त सब विचारों का मूल उद्गम=स्रोत ऋग्वेद मण्डल १०/सूक्त १९०/मन्त्र १-३ हैं जिनको अघमर्षण मन्त्र कहते हैं। उनके प्रथम मन्त्र के **'ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।'** में देखिए- अर्थात् परमेश्वर के अभीद्धात्-सब ओर से दीप्त=ज्ञानमय अनन्त सामर्थ्य से सब विद्या का अधिकरण=खजाना वेद को प्रकाशित किया और (सत्यम्) जो त्रिगुणात्मक अर्थात् सत्व, रज और तमोगुणों से युक्त है, जिसके नाम अव्यक्त अव्याकृत सत् प्रधान प्रकृति हैं जो स्थूल और सूक्ष्म जगत् का कारण है सो भी उत्पन्न हुआ अर्थात् कार्य रूप होके उत्पन्न हुआ।

अभिप्राय यह हुआ कि जो सत्त्व, रज और तमोगुणों की साम्यावस्था प्रकृति थी, उसमें संसार की रचना के लिए स्वयम्भू परमात्मा ने अनन्त ज्ञानमय सामर्थ्य से शक्ति अर्थात् प्राण डाला जिससे वह जगत् का कारण प्रकृति=बनाने की सामग्री सब ओर से प्रकाशित हो उठी। इसका निष्कर्ष यह हुआ कि ज्ञानमय सामर्थ्य=वेद=दिव्यवाक्=परावाक् प्राण के साथ रहती है। शतपथ के अनुसार यही वाचोलोक है जो त्रयीविद्या कहलाती है। इसी के साथ परमेश्वर इस प्रकृति में गर्भधारण करता है। इसी प्रकृति से महान् अर्थात् महत्तत्व और महत्तत्त्व से अहंकार की उत्पत्ति होती है। सत्त्व, रज और तमोगुणों की साम्यावस्था में=अन्तर्मुखी एकीभाव से बहिर्मुखी=विषमावस्था उत्पन्न हुई।

ये महत्तत्त्व और अहंकार परमाणुओं में हुई सूक्ष्म व्यवस्थाओं के ही नाम हैं। अहंकार से प्रत्येक परमाणु पृथक्=पृथक् होकर अपने-अपने गुणों को उद्भासित करता है। फिर ये गुण आसपास के परमाणुओं को आकर्षित करने लगते हैं। इससे परमाणु संयोग बनने लगते हैं। संयोग तीन प्रकार के होते हैं।-

१. रजोगुण प्रधान संयोग जिनको तैजस अहंकार और आज की भाषा में (Electrons) कहते हैं।
२. सत्वगुण, प्रधान संयोग जिनको वैकारिक अहंकार (Protons) कहते हैं।
३. तमोगुण, प्रधान संयोग जिनको भूतादि अहंकार (neutrons) कहते हैं।

महान् वैज्ञानिक महर्षि कणाद वैशेषिक में कहते हैं कि महदादि में द्रव्यत्व (Material) तो है परन्तु इनमें रूपगन्धादि नहीं हैं। इसका कारण है कि इनमें वायु का अभाव है।

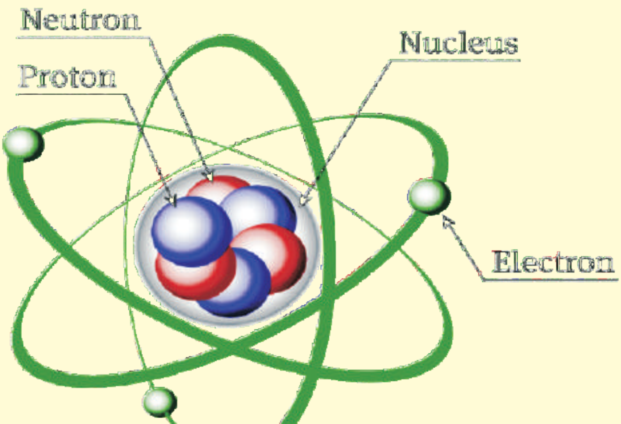

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय द्वारा हाल में 'परमाणु-विज्ञान' नामक विचारोत्तेजक पुस्तक का प्रणयन किया गया है। प्रस्तुत आलेख उस पुस्तक के प्राक्कथन-स्वरूप है। ग्रन्थकार के एतद् सम्बन्धी विचारों का संक्षिप्त परिचय देने हेतु हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं।

**यह पुस्तक न्यास में रु. ८० में विक्रयार्थ उपलब्ध है।**

अहंकार से उभय इन्द्रियाँ अर्थात् श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नासिका, वाक्, पग, हाथ, गुदा, उपस्थ और मन तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ये पंचतन्मात्राएँ बनीं। श्रोत्रादि इन्द्रियों में विकार नहीं होता परन्तु पंचतन्मात्रों में विकार होता है। इन पंचसूक्ष्म तन्मात्रों को अणु कहते हैं। अणु अर्थात् ६० परमाणुओं का एक अणु होता है। यह अणु ही परिमण्डल कहलाता है। जब तक एक-एक परिमण्डल रहते हैं तब तक अणु अर्थात् Molecular रूप में रहते हैं। जैसे ही दो या दो से अधिक प्रकार के अणु= परिमण्डल मिलकर संयुक्त होने लगते हैं तब इनको संयुक्त अणु अर्थात् Compound Molecules कहते हैं। इन्हीं को स्थूल महाभूत कहते हैं। अभिप्राय यह हुआ कि परमाणु Ultimate particle of matter है। ६० परमाणु मिलकर अणु (Atoms) कहे जाते हैं।

ये परिमण्डल रूप में रहते हैं तब इनको Molecules कहते हैं। जब अणुओं के परस्पर मिलने से ढेले अर्थात् बड़े बड़े समूह बनते हैं, तब ये Compound Molecules स्थूल महाभूत कहाते हैं।

समस्त चराचर जगत् के सब पदार्थ पंचमहाभूतों से बने हैं। पंचमहाभूत अनन्त परमाणुओं का संचय ही है। प्रकृति का लिंगभूत पृथिवी आदि कार्यद्रव्य शरीर, इन्द्रिय और विषय भेद से तीन प्रकार का है। भोक्ता जीव का भोग योग्य स्थान विशेष शरीर है जो शरीर आश्रित हुआ स्वस्वविषय के साथ संयुक्त होकर जानने वाला (प्रमाता) के प्रत्यक्ष ज्ञान का साधन 'इन्द्रिय' कही जाती है। जो शरीर और इन्द्रियों से भिन्न आत्मा के भोग का साधन है, उसको 'विषय' कहते हैं। शरीर पार्थिव, जलीय, तैजस और वायवीय होते हैं। ये जीवों के शरीर अपने उन-उन मण्डलों में रहते हैं जैसे पृथिवी मण्डल, जलमण्डल, तेजोमण्डल तथा वायुमण्डलवर्ती होते हैं। इसी प्रकार इन्द्रियाँ जैसे जिह्वा के अग्रवर्ती रसग्राहक रसना जलीय, नेत्रगोलकवर्ती रूप को विषय करने वाले चक्षु तैजस इन्द्रिय, नख से शिखापर्यन्त सब शरीरव्यापी स्पर्श की ग्राहक त्वचा, नासिका गन्धादि विषय का ग्राहक होने से पार्थिव इन्द्रिय कही जाती है। इसी प्रकार नदी, समुद्र, हिम आदि का नाम जलीय विषय, भौम दिव्य, औदर्य्य तथा आकरज भेद से चार प्रकार का तैजस विषय, वृक्षादि के कम्प के हेतु आदि शरीर के मध्यवर्ती रुधिर आदि धातुओं को अपने-अपने स्थान पर पहुँचाने वाले तथा मल-मूत्र को बाहर निकालने वाले वायु का नाम 'वायवीय' विषय है। उसी प्रकार मृत्तिका, पाषाणादि पृथिवी विशेष का पार्थिव विषय है। इन्हीं पंचभूतों से अनेकविध विचित्र आश्चर्यकारी परमाणुओं के संयोग से औषधियाँ आदि बने, फिर अन्न, अन्न से वीर्य और फिर अमैथुनी सृष्टि के अनन्तर अर्थात् प्रथम तो सर्ग के आदि में शरीर परमात्मा बनाकर उनमें जीवों का संयोग करता है तदनन्तर अन्न से वीर्य बनकर मैथुनी सृष्टि में शरीरों का निर्माण होता है। एक शरीर में अन्न भक्षण करने से धातुओं के निर्माण से जो वीर्य व धातु बनता है उसमें रज वीर्य की अवस्था में शरीरावयव सूक्ष्म रूप में विद्यमान होते हैं। उनके विद्यमान होने के कारण कार्य्यभूत शरीर में अवयवरूप से उनका विद्यमान होना संभव है।

कुल मिलाकर सारांश यह है कि-

१. प्रकृति- जिसके सत्त्व, रज और तम तथा परमाणु अवयव हैं। इन अवयवों की एकावस्था ही प्रकृति है।

२. इस प्रकृति में स्वयम्भू परमात्मा अपनी शक्ति से गर्भधारण करता है।

३. यह शक्ति वाक्-प्राण रूप कही जाती है। क्योंकि प्राण अपनी वाक् के साथ ही रहता है।

४. यही वाक्-अमृत, दिव्य वाक् कही जाती है, यही वाचोलोक है, यही त्रयी विद्या कही जाती है। इसी में शब्द, अर्थ-सम्बन्ध ज्ञानस्थ हो एकरस रहते हैं।

५. त्रयी विद्या को ऋक्, यजुः और साम कहते हैं। यही वाक् समस्त रचना में परिच्छिन्न होकर व्यापक रहती है। इसी त्रयी विद्या के साथ परमेश्वर प्रकृति में प्रविष्ट होता है।

६. इसी अभीद्ध ज्ञानमय तप=अर्थात् अनन्त सामर्थ्य से सब मैटर का पिण्ड बनकर गति अर्थात् केन्द्र, व्यास और परिधि बनते हैं जो कि ऋक् यजुः और साम के ही नामान्तर हैं।

७. इसी त्रयीविद्या अर्थात् ऋक्, यजुः और साम केन्द्र-व्यास-परिधि रूप में भिन्न-भिन्न आरम्भक द्रव्यों अर्थात् परमाणु समूहों से बने परिणाम=द्रव्यमान युक्त मण्डलायतन बनकर पदार्थ निर्माण अर्थात् जैसे पक्षी

आकाश में उड़ते हैं, वैसे भ्रमण होते हुये निर्मित होते हैं।

८. इसी त्रयीविद्या से प्रत्येक मण्डल की गति त्रिज्या के साथ एक निश्चित रूप में तुली रहती है।

९. इसी त्रयीविद्या से परमाणु-समूहों अर्थात् आरंभक द्रव्यों के मण्डल में केन्द्र की भिन्न भिन्न अन्तरीय गतियों से ही ठोस, तरल और गैसीय पदार्थों की उत्पत्ति होती है।

१०. यही त्रयीविद्या सृष्टिरूपी यज्ञ=परमाणुओं के संगमन में उत्पन्न भिन्न भिन्न पदार्थों=आकाशीय तत्वों में गान करती है। इसी से गायत्री कहाती है।

११. त्रयीविद्या की एक संज्ञा 'अग्नि' है। इसीलिए गायत्री भी अग्नि है। अग्नि तीन प्रकार की त्रेधा कही जाती है।

१२. यही गायत्री गान करती हुई सब पदार्थों में गति करती है और अन्य छन्दों को भी समिन्धन करती है अर्थात् सब छन्दों का मूल है।

१३. यों भी कह सकते हैं कि इस दृश्य और अदृश्य, चर और अचर, स्थावर और जगंम में जो कुछ भी भूत जात है, वह सब गायत्री ही है।

१४. यह ही त्रयीविद्या है जो सब ब्रह्माण्डस्थ पदार्थों में तपती है। मानो यही सब बोलती है। जो ऐसा नहीं मानता कि 'सैषा त्रयीविद्या तपति' वह अविद्वान् है। ऐसा ऋषि मानते हैं।

इस प्रकार परमाणु सम्बन्धी स्पष्ट विवेचन इस पुस्तक के अन्तर्गत आपको पढ़ने को मिलेगा। इस ग्रन्थ में कल्पनाओं का अभाव है। प्राचीन आर्ष सिद्धों को जो दर्शन हुआ, उसी को ऊहा के साथ संगत कर पाठकों के समक्ष रखने का यत्न किया है।

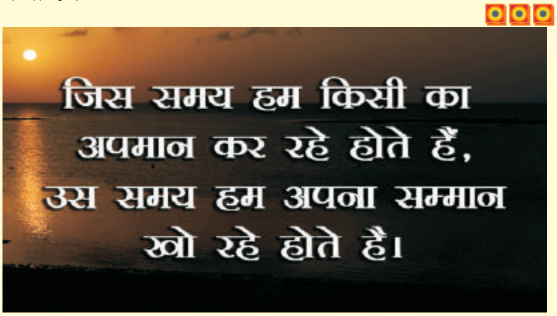



न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

अब ४००० रु. सैकड़ा

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब एक हजार प्रतियों के लिए

१५००० रु.



## आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

## "सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

### कौन बनेगा विजेता

☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।

☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।

☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।

☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।

☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।

☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

☞ वर्ष भर में एक ( १ ) के स्थान पर चार ( ४ ) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।

☞ पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।

( अ ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

( ब ) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

( स ) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

( द ) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

☞ वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन ( लाट्री द्वारा ) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।

☞ पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

## ₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
## "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

**पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।**

हमारी मातृभूमि रत्नगर्भा है। इस रत्नगर्भा भारत माँ के गर्भ से अनेकों राजा, महाराजा, योद्धा, शूरवीर, ज्ञानी, ध्यानी, ऋषि-महर्षि, योगी, तपस्वी और न जाने कितने 'रत्न पैदा हो चुके हैं। इन्हीं देदीप्यमान रत्नों में 'सुभाषचन्द्र बोस' अमूल्य रत्न थे। सुभाष बाबू राजा थे, क्रान्तिकारी थे, ज्ञानी थे, ध्यानी थे, राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले एक शाश्वत हस्ताक्षर थे। जिनके व्यक्तित्व, कीर्तित्व का प्रभाव सदा अक्षुण्ण रहेगा।

जिस धरती पर सुभाष ने जन्म लिया उसी धरती पर एक महान् व्यक्तित्व के स्वामी, एक महान् आदर्शवान सम्राट ने भी जन्म लिया था जिसका नाम था सम्राट् अशोक। भारतवर्ष के इस महान् सम्राट को युद्ध से वितृष्णा हो गई और वह धर्म की शरण में चला गया था। उसके कानों में प्रेरणा मंत्र गूँजने लगा।

**बुद्धं शरणं गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि।**
**संघं शरणं गच्छामि।**

वह राजा बुद्ध की शरण में चला गया, धर्म की शरण में चला गया, संघ की शरण में चला गया। हमारे देश में एक और राजा का प्रादुर्भाव हुआ जो अपने मन का राजा था और जनता का वह हृदय सम्राट था नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जो स्वनिर्मित राज्य का अधिष्ठाता बना। इस राजा को धर्म से वितृष्णा हो गई और वह युद्ध की शरण में चला गया और इस राजा के कानों में प्रेरणा मंत्र गूँजने लगा।

**युद्धं शरणं गच्छामि। कम्मं शरणं गच्छामि।**
**संघं शरणं गच्छामि।**

यह राजा युद्ध की शरण में चला गया, कर्म की शरण में चला गया और संघ (आजाद हिन्द संघ) की शरण में चला गया। सम्राट अशोक ने युद्ध को छोड़ा और धर्म को अपनाया। युद्ध की विभीषिकाओं से उनका मन भर गया। उसने उस युद्ध से अपना सम्बन्ध नहीं रखा जिसका आधार था- रक्तपात, नरसंहार व हाहाकार। सुभाष ने धर्म को छोड़ा, युद्ध को अपनाया। धर्म के तत्कालीन विकृत रूप से उसका मन भर गया। जिसका आधार था प्रदर्शन, मिथ्याचार तथा आडम्बरपूर्ण व्यवहार।

सुभाष ने धर्म का बाह्यरूप तो छोड़ दिया परन्तु उसकी मूल भावनाओं को नहीं छोड़ सका। धर्म को अपनाकर भी वह युद्ध करता रहा। सुभाष युद्ध करता था अज्ञान के अंधकार से हिंसा की हिंसक प्रवृत्ति से और मन की दुर्बलता से।

सुभाष का धर्म था त्याग, बलिदान, आत्मोत्थान, ईश्वरत्व की उपासना, मातृभूमि की मुक्ति और अथक जनजागरण।

अशोक ने दीक्षा ली थी उपगुप्त से और सुभाष ने दीक्षा ली थी-कर्मवीर चितरंजन दास से। अशोक तथा सुभाष की प्रेरणा भूमि एक ही रही। कलिंग के युद्ध ने अशोक का हृदय परिवर्तन किया और उसी के आधुनिक रूप उड़ीसा में सुभाष की पार्थिव देह और उसके संकल्पों का जन्म हुआ।

सुभाष का जन्म २३ जनवरी १८९७ को शनिवार के दिन १२:१५ अपराह्न में हुआ। सुभाष का जन्म मध्याह्न को हुआ और वह

**नेताजी की मृत्यु कब, कैसे हुयी, उस विमान हादसे से क्या वे बच सके थे? इस संदर्भ में प्राय: दो पक्ष हैं। प्रथम, जैसा कि प्रस्तुत लेख में वर्णित है कि नेता जी की मृत्यु ताइहाकू के विमान हादसे में ही हो गयी थी। द्वितीय पक्ष के अनुसार नेताजी विमान हादसे से बच गए थे तब से साइबेरिया से लेकर के गुमनामी बाबा तक की यात्रा में अनेक बातें कही जाती हैं, उस पक्ष को भी हमने पूर्व में 'सत्यार्थ सौरभ' में प्रस्तुत किया था।**

**– सम्पादक**

जीवन भर मध्याह्न के सूर्य की भांति चमकता रहा।

उड़ीसा के कटक में जिस समय सुभाष का जन्म हुआ, उस समय भारतवर्ष में हजारों बच्चों का जन्म हुआ होगा पर वे सब के सब तो सुभाष जैसे संकल्पी, धुनी, लक्ष्यनिष्ठ, पराक्रमी और शौर्यवान नहीं हुये। यही स्थिति हमें सोचने को विवश करती है कि यद्यपि संसार में हजारों व्यक्ति एक ही समय में जन्म लेते हैं पर उनमें विरले ही ऐसे होते हैं जो जीवन के लिए कोई ध्येय लेकर आते हैं और इस ध्येय की पूर्ति के लिये उनकी हर सांस आती जाती है। सुभाष का अस्तित्व समुद्र के असंख्य बुलबुलों के 'वाड़व ज्वाला' के समान था। उस समय भारत बड़े आंसुओं के सागर के समान था, जिसमें निराशा, हताशा, हीन भावना की धाराएँ आकर मिल रहीं थीं। सागर के धरातल पर भी कभी लपटें उठती हैं? सुभाष का जीवन आंसुओं के सागर में उठी हुई लपट के समान था। यह वह लपट थी जिसने अपने को प्रकाश दिया और अपने शत्रुओं को जलाया।

उस प्रचंड 'लपट' के बुझने की कथा कर्नल हबीबुर्रहमान की अभिव्यक्ति के आधार पर चंद शब्दों में प्रस्तुत की जाती है। नेताजी के विमान ने सैगोन से १७ अगस्त १९४५ संध्या ५ बजकर १५ मिनट पर उड़ान भरी और टूरेन पहुँचा। रात्रि विश्राम टूरेन में ही हुआ। अगने दिन १८ अगस्त १९४५ को फिर विमान अपराह्न में ताइहोकू विमान स्थल पर रुका। विमान में पेट्रोल भराने तथा खाने-पीने के बाद पुनः विमान २:३५ मिनट पर उड़ा। २०० से ३०० फिट ऊपर विमान उठा ही था कि भंयकर आवाज सुनाई पड़ी। नेताजी, कर्नल हबीब तथा जनरल शीदी जो विमान के अन्दर थे, सभी लोगों ने सोचा दुश्मन के लड़ाकू विमान ने उड़ते देख लिया है और ऊपर से झपट्टा मारा है। परन्तु बाद में समझ में आया कि पोटे इंजन का 'प्रोपेलर' टूट गया है। पोटे इंजन ने काम करना बंद कर दिया है। केवल स्टार बोर्ड इंजन काम कर रहा था। हवाई जहाज ने डोलना प्रारम्भ कर दिया था। चालक उसका सन्तुलन संभालने का प्रयत्न कर रहा था। कर्नल हबीब ने नेताजी को देखा। वे बिल्कुल अविचल थे। कुछ ही क्षणों में विमान नाक की तरफ से जमीन पर टकराया और थोड़ी देर के लिये आँखों के सामने अंधेरा छा गया। कुछ क्षणोपरांत जब कर्नल हबीब की चेतना लौटी तो उसने अनुभव किया कि सारा सामान उसके ऊपर लदा है और निकट में आग फैली है। नेताजी के सर में चोट लगी थी और वे खड़े हो चुके थे निकलने का प्रयास कर रहे थे। परन्तु पीछे से निकलना संभव नहीं था। कर्नल हबीब ने नेताजी को आगे से निकलने का निवेदन किया। नेताजी को स्थिति का अंदाजा हो गया था। उन्होंने विमान के अग्रभाग से निकलने का प्रयत्न किया जो जमीन से टकराकर चूर हो गया था और जिससे लपटें उठ रहीं थीं। नेताजी उन्हीं लपटों से बाहर निकल गये। नेताजी के खाकी-सूती कपड़े पर पेट्रोल फैल गया था और कपड़ों नें आग पकड़ ली थी। विमान के बाहर खड़े नेताजी अपने बुशकोट का बेल्ट खोलने का प्रयास कर रहे थे। कर्नल हबीब नेताजी की ओर झपटा और पट्टा खोलने में उनकी मदद करने लगा जिससे उसके हाथ बुरी तरह जल गये। नेताजी का चेहरा बुरी तरह जल गया था तथा कट-पिट चुका था। नेताजी कुछ मिनट तक खड़े रहे और फिर भूमि पर गिर पड़े। नेताजी की स्थिति देखकर कर्नल हबीब का दिल बैठ सा गया और वे भी नेताजी के पास ही पड़ गये और बेहोश हो गये। विमान की दुर्घटना होने के १५ मिनिट पश्चात् ही एम्बुलेंस से घायल नेताजी व कर्नल हबीब को ताइहोकू के सैनिक अस्पताल में पहुँचा दिया गया। नेताजी की बेहोशी नहीं टूटी थी परन्तु कर्नल हबीब को होश आ गया था। वे नेताजी की बगल में ही थे। कर्नल हबीब किसी तरह लड़खड़ाकर नेताजी के पास पहुँचा। जापानियों ने नेताजी को बचाने का भरसक प्रयास किया परन्तु सब व्यर्थ। अस्पताल में लाये जाने के छह घंटे पश्चात् १८ अगस्त १९४५ को ९ बजे रात्रि में नेताजी शांतिपूर्वक इस संसार से विदा हो गये। क्रान्ति की लपट बुझ गई। कर्नल हबीब ने अपने वक्तव्य में बताया कि मुर्दा की हालत में कभी-कभी हसन का नाम पुकारा। मृत्यु के कुछ समय पूर्व उन्हें होश आया और उन्हें जब पूर्ण विश्वास हो गया कि वे बच नहीं सकेंगे तो हबीब को उन्होंने देशवासियों के नाम छोटा सा संदेश दिया। उन्होंने हबीब से कहा- 'हबीब! मेरा अंत बहुत निकट आ गया है। अपने देश की आजादी के लिए मैं जीवन भर लड़ता रहा हूँ। तुम जाकर देशवासियों से कहना कि वे भारत की आजादी के लिये लड़ाई जारी रखें। भारत आजाद होगा और बहुत शीघ्र ही।' नेताजी के यही अंतिम शब्द थे।

कर्नल हबीब ने बहुत प्रयास किया कि नेताजी के शव को सिंगापुर भेजने का प्रबंध किया जाय अथवा टोकियो भेजने का। सैनिक अस्पताल के कर्मचारियों ने बताया कि यह संभव नहीं है। नेताजी के जनाजे को विमान में रखने में व्यावहारिक कठिनाई आ रही थी। कर्नल हबीब की सम्मति से ही ताइहोकू अस्पताल से सम्बद्ध जो पवित्र स्थान था, वहाँ पूरे फौजी सम्मान के साथ नेताजी का दाह संस्कार किया गया। नेताजी का दाह संस्कार २० अगस्त १९४५ को किया गया।

कर्नल हबीब के घाव भरने में लगभग तीन सप्ताह लग गये। तीन सप्ताह बाद एक एम्बूलेंस विमान टोकियो जाने वाला था। कर्नल हबीब को उसमें स्थान मिल गया और नेताजी की भस्म के साथ ६ सितम्बर को वे टोकियो पहुँच गये।

नेताजी के पार्थिव शरीर की भस्म तीन दिनों तक श्रीराममूर्ति के घर रखी गयी जो 'आजाद हिंद संघ' की जापान शाखा के अध्यक्ष थे। फिर १४ सितम्बर को नेताजी की भस्म का पात्र सूरीनाम क्षेत्र के रैंकोजी के बौद्ध मंदिर में रख दिया गया।

नेताजी का जीवन भी शानदार था और मृत्यु भी। जिस शान से नेताजी ने इस संसार के सामने अपने कृतित्व को रखा वह निराला था। हमारे देश में हजारों क्रान्तिकारियों ने जन्म लिया। देश के लिए अपना बलिदान दिया परन्तु नेताजी के सोच की दिशा अपने आप में अद्वितीय थी।

एक अकेला व्यक्ति लाखों लोगों का संगठन कर, देश की आजादी के लिए 'प्रबलतम' शत्रु को ललकारे और शत्रु की छाती पर अपनी विजय पताका फहरा दे, यह केवल नेताजी ही कर सकते थे। नेताजी के जीवन के किसी भी 'फलक' को देखें तों हर फलक में तीक्ष्णता, तीव्रता तथा ज्योतिर्मय आभा दिखाई पड़ती है। आज नेताजी हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनके जीवन की प्रचंडता और प्रखरता का सूक्ष्म प्रभाव आज भी भारतवासियों के हृदय पर अक्षुण्ण है।आज नेताजी जैसे व्यक्तित्व की परम आवश्यकता है। देश की आजादी का सपना देखनेवाले उस महान् सपूत के महान् राष्ट्र की महानता पर ग्रहण लग गया है और घोटाला-भष्ट्राचार-नैतिक पतन की पराकाष्ठा रूपी राहू-केतु भारत माता की जाज्वल्यमान दिव्य-छवि को ग्रस रहा है। अतं में...

**अवसाद पूर्ण जीवन को हास चाहिए,**
**देश के गद्दारों की लाश चाहिए।**
**मुमूर्ष मानवता को सांस चाहिए और भारत को फिर से सुभाष चाहिए।।**


अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

**सत्यार्थप्रकाश**

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ


## संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़

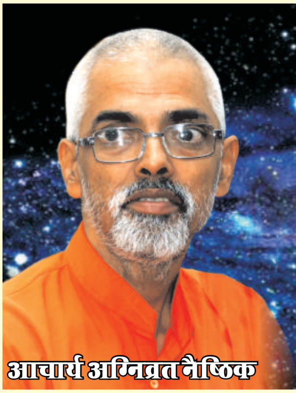

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

# ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता- 6

## विज्ञान क्या है?

इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक भौतिक विज्ञान बल एवं ऊर्जा को ठीक-२ समझ नहीं पा रहा है। वे कैसे कार्य करते हैं, यह अज्ञात है। सूक्ष्म परमाणु अणु अथवा तरंगें कैसे सतत चल रही हैं? यह भी सर्वथा अज्ञात है। 'Feynman' की यह स्पष्ट स्वीकारोक्ति सराहनीय है। वस्तुतः वर्तमान विज्ञान की कार्यशैली की एक सीमा होती है। Science शब्द का अर्थ करते हुए Chambers Dictionary में लिखा है-

_"Knowledge ascertained by observation and experiment, critically tested, systematized and brought under general principles, esp in relation to the physical world, a department or a branch of such knowledge or study."_

Oxford advanced learners dictionary के Indian Edition में Science का अर्थ इस प्रकार किया है-

_"Organized knowledge esp when obtained by observation and testing of facts, about the physical world, natural laws-"_

इन दोनों परिभाषाओं से स्पष्ट है कि भौतिक जगत् का जो ज्ञान प्रयोगों, प्रेक्षणों और विविध परीक्षणों से सुपरीक्षित एवं व्यवस्थित होता है, वह आधुनिक विज्ञान की सीमा में माना जाता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि हमारे पास परीक्षण के जितने अधिक साधन उपलब्ध हों, हमारा विज्ञान उतना अधिक परीक्षण करके सृष्टि के पदार्थों को जान सकता है। अपने तकनीकी साधनों की सीमा के बाहर विद्यमान कोई भी पदार्थ, चाहे कितना भी यथार्थ क्यों न हो, उसे विज्ञान स्वीकार नहीं कर सकता। पश्चिमी देशों के विज्ञान को आइजक न्यूटन से पूर्व गुरुत्वाकर्षण बल का पता नहीं था, गैलीलियो एवं कापरनिकस के पूर्व पृथिवी के आकार व परिक्रमण का ज्ञान नहीं था, तब तक उनके लिए गुरुत्वाकर्षण बल, पृथिवी का गोलाकार होना तथा सूर्य के चारों ओर परिक्रमण करना आदि विषय विज्ञान के क्षेत्र में नहीं आते थे अर्थात् ये सभी तथ्य कल्पनामात्र थे। परन्तु जब इन वैज्ञानिकों ने इन पर प्रेक्षण व प्रयोग, तो ये सभी तथ्य वैज्ञानिक सत्य रूप में प्रतिष्ठित हो गये। आज संसार में जो भी नये-२ आविष्कार हो रहे हैं, वे अब से पूर्व कल्पना के विषय थे परन्तु अब विज्ञान व तकनीक बन गये। इसी कारण कहा जाता है कि विज्ञान परिवर्तनशील है। इसे वर्तमान विज्ञान की विशेषता कहें वा अपूर्णता, यह वैज्ञानिकों को स्वयं विचारना चाहिये। मैं सूर्य को देख पाऊँ वा नहीं, इससे सूर्य और उसके विज्ञान में कोई परिवर्तन नहीं आयेगा, तब मैं इसे अपने प्रेक्षणों व प्रयोगों की सीमा में कठोरतापूर्वक क्यों बांधने का हठ करूँ? स्थूल रूप से ज्ञान के दो क्षेत्र हैं। एक वह है, जिसके प्रेक्षण व प्रयोग की तकनीक वर्तमान में उपलब्ध हैं, दूसरा वह है, जिसके प्रयोग व परीक्षण की तकनीक मनुष्य द्वारा विकसित किये जाने की सम्भावना हो सकती है। इसके अतिरिक्त ज्ञान का एक क्षेत्र ऐसा भी है, जिसका प्रयोग व परीक्षण किसी तकनीक से सम्भव नहीं, बल्कि जिसे योग साधनाजन्य दिव्यदृष्टि से ही जाना जा सकता है। इन तीनों प्रकार के ज्ञान में उचित तर्क का होना अनिवार्य है। जो बात सामान्य सुतर्क तथा ऊहा की दृष्टि से ही असम्भव प्रतीत हो, वह उपर्युक्त तीनों प्रकार के ज्ञान में से एक भी ज्ञान के क्षेत्र में नहीं आयेगी। यहाँ ऊहा व तर्क का यथार्थ आशय भी गम्भीर विचारक ही जान सकते हैं, सामान्य व्यक्ति नहीं। जिस-२ व्यक्ति की प्रतिभा, साधना जितनी-२ अधिक होगी, उस उसकी तर्क व ऊहा शक्ति उतनी-२ अधिक यथार्थ होगी। इस कारण वर्तमान विज्ञान को अपने क्षेत्र के बाहर जाकर सुतर्क व ऊहा की दृष्टि से भी विचारना चाहिये। यदि कोई सज्जन यह कहे कि सुतर्क व ऊहा का विज्ञान के क्षेत्र में कोई महत्व नहीं है, मैं उस सज्जन को कहना चाहूंगा कि विज्ञान का जन्म सुतर्क एवं ऊहा रूप दर्शन से ही होता है और जहाँ विज्ञान का सामर्थ्य वा क्षेत्र समाप्त हो जाता है, वहाँ उसकी समाप्ति सुतर्क व ऊहा रूप दर्शन में ही होती है किंवा विज्ञान की चरम सीमा से परे दर्शन की सीमा पुनः प्रारम्भ होती है।

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ( वैदिक वैज्ञानिक )
( 'वेदविज्ञान-अलोकः' से उद्धृत )

# आर्य समाज के भावी कार्यक्रमों से सम्बन्धित एक अपील

आर्य सन्यासीवृन्द, विद्वत्-मण्डल, उपदेशकगण, आर्य समाजों तथा सभाओं के पदाधिकारी एवं समस्त आर्य भाई बहनों के नाम

समाज के स्वर्णिम भूतकाल को याद करो जिसका प्रारम्भ हुआ ऋषि के बलिदान से। महान् तपस्वी विद्वानों के वैचारिक शोध मार्ग से प्रेरणा पाकर हमसब आत्मिक सुख से तृप्त हुए हैं। अतः हम सबका दायित्व है कि वर्तमान राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करके सफल सुखद भविष्य निर्माण करें।

किसी भी राष्ट्रीय और मानवीय उन्नति का प्रतीक ऐतिहासिक धरोहर धर्म-संस्कृति होती है। भौतिक विकास और मानव शक्ति राष्ट्र का शरीर है, तो सत्य सनातन वैदिक धर्म संस्कृति ही 'भारत माता' की आत्मा है। अन्न, वस्त्र, भोग, ऐश्वर्य साधन तो सभी को सदैव प्राप्त रहते हैं, संस्कृति परिवर्तन ही गुलामी होती है। मुगलों व अंग्रेजों की पराधीनता में वैचारिक परिवर्तन से उत्पन्न परस्पर विरोध, द्वेष ही वर्तमान दुःखों का कारण है। स्वसंस्कृति के बिना भौतिक-उन्नतिशील राष्ट्र भी प्रायः छल, कपट, लोभ से भ्रष्ट, ईर्ष्या द्वेषयुक्त वस्तु मात्र रह जाता है। वर्तमान में राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय अनेकों साम्प्रदायिक, पक्षपाती संस्थाएँ प्रभु प्रदत्त धर्म, न्याय, दया, करुणा, प्रेम, सत्य, अहिंसा, ज्ञान सेवादि श्रद्धामयी मानव भावनाओं का शोषण कर रही हैं। अधर्म और स्वार्थ से प्रेरित व्यवहार द्वारा जाति, भाषा, क्षेत्र, धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक आतंक से मानवता के विनाश को आमन्त्रित कर रहीं हैं। महाभारत के पतन से दुःखी महर्षि दयानन्द जी ने संसार को पुनः वैदिक संस्कृति का मार्ग दिखाया और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध वैचारिक आन्दोलनों को प्रारम्भ किया। भारत (आर्यावर्त) की उन्नति हेतु कहा 'एक धर्म, एक भाषा, एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान एक्य है। जहाँ भाषा, भाव, भावना में एकता आ जाए वहाँ सारे सुख एक-एक करके सागर में नदियों की भांति प्रवेश करने लगते हैं' भारत ही नहीं संसार के हितैषीजन आर्य समाज की क्षमता से परिचित समाज का नेतृत्व चाहते हैं। आर्य समाज से प्रभावित यूरोपीय विद्वान् 'एन्ड्रूजैक्सन डेविस' ने लिखा 'आर्य समाज की भट्टी में सुलगती-धधकती आग सारे संसार के पाखण्ड को भस्म कर देगी'। किन्तु आज हम पद-प्रतिष्ठा, स्वार्थवश ऋषि-महर्षियों के विचारों को भुला बैठे हैं और याद रह गई अक्रांति, इस्लाम से मिली 'हिन्दू' अंग्रेजों से मिली 'इण्डिया' नाम की संस्कृति और स्वराष्ट्र में जैन, बौद्धों आदि से प्रारम्भ सनातन नहीं नित्य, नवीन मूर्तिपूजा जो अन्धविश्वास, पाखण्ड तंत्र की संस्कृति का मूल है। ऋषि सन्देशानुसार अध्यात्म ही नहीं, भौतिक उन्नति में भी सबसे बड़ी बाधा अविद्या है जो सब दुःखों का मूल है।अतः हमें सामाजिक चरित्र व राष्ट्रीय उन्नति हेतु वैदिक शिक्षा संस्कृति को प्राथमिकता देनी होगी। यथा-

१. लड़के-लड़कियों के स्कूल अलग-अलग हों जिनके मध्य दूरी २-३ किलोमीटर हो। लड़कियों को शिक्षिका व लड़कों को शिक्षक ही पढ़ावें।
२. प्रथम कक्षा प्रवेश-पत्र में जाति, धर्म नाम, सम्प्रदाय घोषणा को बन्द किया जाये। मात्र जन्म स्थान, पता व

माता-पिता का नाम अंकित कराया जाये, जिससे जातीय झगड़े व आरक्षण विवाद समाप्त होगा।

३. राष्ट्रभाषा हिन्दी को सभी प्रान्तों में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाये। अंग्रेजी को स्वैच्छिक विषय के रूप में पढ़ाया जाये। स्वतंत्रता, स्वभाषा, स्वधर्म,स्वसंस्कृति बिना स्वराज्य अधूरा है।

४. सभी शिक्षा निःशुल्क, प्रान्तीय व राष्ट्रीय अनुदान पर आश्रित हो। उपरोक्त सुधारों से जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र, भाषा, सीमा भेदभाव मिटेगा। आरक्षण समस्या का समाधान होगा, योग्यता का सम्मान, राष्ट्रीय विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

५. शिक्षा का पाठ्यक्रम सम्पूर्ण राष्ट्र में एक समान होना चाहिए। भूगोल के अतिरिक्त गणित, कृषि, औषध, विज्ञान, आकाशीय ज्योतिष, खगोलशास्त्र आदि विषयों का भारत में ही नहीं संसार में पाठ्यक्रम एक समान है। आत्मिक शिक्षा, शिष्टाचार व भौतिक उन्नति की आवश्यकता में सारा संसार एकमत है।

६. पाठ्यक्रम प्रान्तीय भाषाओं में हो किन्तु लेखन देवनागरी लिपि में किया जाये, क्योंकि शब्दरूपी आत्मा का शरीर लिपि है। यही लिपि-एकता वैचारिक संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का आधार है। (उदाहरणार्थ रूस गणराज्य) परिणामस्वरूप राष्ट्र में सभी परीक्षाओं का परीक्षा पत्र एक समान होगा, जो राष्ट्रीय विश्वास व प्रगति का मार्ग है।

А Б В Г Д Е
Ё Ж З И Й К
Л М Н О П Р
С Т У Ф Х Ц
Ч Ш Щ Ъ Ы Ь
Э Ю Я

७. विज्ञान प्रमाणित सार्वभौम आत्मिक व्यवहार धर्म, न्याय, दया, करुणा, प्रेम, सत्य, सेवा, अहिंसा, ज्ञान, शिक्षा, सदाचार की आवश्यकता में सभी एक मत हैं। अतः धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक परिवर्तन पर रोक लगाई जाये। नैतिक शिक्षा व राष्ट्रधर्म के सामंजस्य से परस्पर प्रेम बढ़ेगा और विदेशी धन का हस्तक्षेप बन्द होगा।

८. देश में नये धर्म स्थलों पर रोक लगाई जाये। पुराने धर्म स्थलों में स्कूल, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों की, जन हितार्थ व्यवस्था की जाये।

९. धर्म के नाम पर दिये दान से आयकर छूट सम्बन्धित धारा-८० जी को समाप्त किया जाये।

१०. राष्ट्रीय अवकाश, स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस को ही घोषित किया जाये, अन्य नहीं।

११. सम्पूर्ण राष्ट्र में आयकर व्यवस्था एवं जी.एस.टी. भी एक समान है अतः गृह के आवश्यक पदार्थों व सामान्य साधनों विद्युत, जल, ईंधन, पेट्रोल, डीजल, गैस आदि का मूल्य एवं वृद्धावस्था पेंशन आदि भत्ते भी समान हों।

१२. प्रत्येक परिवार से एक ही व्यक्ति सरकारी सेवा में लिया जाये। प्रति ३ वर्षीय स्थानान्तरण किया जाये। भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जाने पर सब सुविधा व सेवाकाल समाप्त किया जाये।

१३. किसी भी नागरिक को तलाक (डिवोर्स) का अधिकार न दिया जाये। डिवोर्स के बाद ५ वर्ष तक पुनर्विवाह प्रतिबन्धित किया जाये। मत-मतान्तर प्रावधान से दूर सभी को दो बच्चों का अधिकार। अधिक पर विशेष कर (टैक्स) लगाया जाये।

**चुनाव व संसद सुझाव**

१. सांसद चुनाव हेतु प्रत्याशी की शिक्षा, आयु, चरित्र, योग्यता स्तर सुनिश्चित किया जाये। चुनाव निज चुनाव चिह्न पर हो, पार्टी चिह्न पर नहीं। यदि पार्टी स्तर पर चुनाव हो तो प्रत्याशी को दूसरे क्षेत्रों से प्रत्याशी बनाया जाये।

२. भूतपूर्व सांसद जो संसद में ७० प्रतिशत उपस्थित न रहा हो, उसे दोबारा चुनाव प्रत्याशी न बनाया जाये।

३. चुनाव आयोग प्रत्याशियों का परिचय-पत्र, कार्य योजना, घोषणा पत्र, चुनाव क्षेत्रों में वोटरों को वितरित कराये, प्रत्याशी निज प्रचार न करें। इससे शराब, प्रलोभन, जनता का निज लोभ बन्द होगा। प्रतिबन्धित होने का पालन कराया जाये। इससे चुनाव में काले धन व अपराध पर अकुंश लगाया जा सकेगा।

४. संविधान विधेयक नागरिक आत्म प्रकृति के आधार पर बने। व्यक्ति, जातीय, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्रवाद पर नहीं। विधेयक प्रस्ताव पर पार्टी व्हिप (आदेश) जारी न

किया जाये। सदस्य स्वतंत्र मतदान करें। पार्टी व्हिप भी सामन्तवाद का प्रतीक है।

५. अल्पकाल समाजसेवा से सांसदों, विधायकों की पेंशन को (सरकारी कर्मचारियों की भांति) बन्द किया जाये। इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का सुधार होगा।

६. सम्पूर्ण राष्ट्र में शराब, मांसाहार, नशाखोरी पर प्रतिबन्ध हो। शिक्षा, समाज, उत्पीड़न, नारी रक्षा में सभी नागरिकों का परस्पर सहयोग हो।

७. जन्मना जातिवाद को छोड़ गुण, कर्म, स्वभाव, समान बल-बुद्धि के आधार पर विवाह करने वालों को आर्य समाज और सरकारें भी प्रोत्साहित करें।

बन्धुओं! उपरोक्त समस्त कार्य सदाचार, त्याग, बलिदान, संगठनात्मक शक्ति से पूरे किये जा सकते हैं, किन्तु आज हम त्याग बलिदान से कोसों दूर ऋषिवर द्वारा किये आन्दोलन कार्यों से सन्तुष्ट होकर जीवनयापन हेतु वेद प्रचार को व्यवसाय बनाकर मान-प्रतिष्ठा और धन कमाने का उद्योग बना बैठे हैं। बदलते समय की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप किये बिना समाज अपनी पहचान और सम्मानीय प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकता। अतः समाज सुधार से संगठन शक्ति का विकास करें। उपरोक्त व निम्न कार्यों पर विचार ही नहीं, जाति, भाषा, सम्प्रदाय, भेदभाव मिटाकर सरकार से अनुरोध करें, आवश्यकता पड़ने पर आन्दोलन भी करें।

१. ६० वर्ष की आयु उपरान्त कोई समाज का पदाधिकारी न बने। प्रत्येक वर्ष चुनाव में नये पदाधिकारी चुने जायें।

२. ६० वर्षीय वृद्ध वानप्रस्थी निःशुल्क शिक्षा, सुरक्षा, श्रमदान-कार्यों से समाज सेवा करें।

३. संन्यासीगण, उपदेशक, भजनोपदेशक, सार्वदेशिक सभा से पंजीकृत हों। प्रचार दक्षिणा का शतांश सार्वदेशिक सभा को देवें। उनका वृद्ध जीवन दायित्व सभा लेवें। ऐसा करने से समाज संगठन में परस्पर विश्वास बढ़ेगा। ऐसा न करने वालों को प्रवचन, उपदेशकी से बहिष्कृत किया जाये।

४. साप्ताहिक यज्ञ, सत्संग नगर, मोहल्लों में परिवारों के सहयोग से करें। आमंत्रण समाज करें। यज्ञ बाद गली में आवश्यकतानुसार श्रमदान किया जाये।

५. युवाओं से जनसम्पर्क करके सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ऋषि ग्रन्थों की कक्षा लगावें। वाद-विवाद, परीक्षा बाद ऋषि ग्रन्थों को पारितोषिक स्वरूप भेंट करें।

६. शहर, चौराहों, उद्यानों, गलियों, बस-स्टैण्ड, रेलवे-स्टेशन, मुख्य मार्गों पर वेदों के संदेश, महापुरुषों व आर्य देशभक्तों के चित्र व संदेश होर्डिंग, स्टिकर लगाये जायें।

७. पुरोहित को 'दीक्षा गुरु' सम्मान से प्रस्तुत किया जाये। पंडित संध्या-यज्ञ मंत्रों का अर्थ सहित पाठ करावें। शंका व प्रश्नों का विज्ञान व अध्यात्म समन्वयात्मक समाधान करें। यज्ञ पद्धति सार्वदेशिक धर्मार्य सभा से अनुमोदित हो।

उपसभाएं गांव-गांव तिमाही, प्रान्तीय सभा प्रतिमाह जनपदों में सम्मेलन करें। सभी समाजों के पदाधिकारी सम्मेलनों में उपस्थित रहें। सभाएं मासिक पत्रों में आगामी कार्यक्रमों की सूचना, पूर्व प्रचार की समीक्षा ऋषि ग्रन्थों के संदर्भ सहित प्रकाशित करावें। व्यक्ति-प्रशंसा और आक्षेप न किए जायें।

आर्य बन्धुओं! हमारे धर्म ग्रन्थ साहित्य, कार्यक्रम, प्रक्रिया, शैली विचार मंथन उत्तम किन्तु प्रचार प्रस्तुतीकरण कमजोर है। इसे युग की मान्यतानुसार वर्तमान संसाधनों द्वारा प्रचारित करें।

विशेषः- समाज सभाओं में विचार भेद को संगठन में उपस्थित रहकर दूर करें। मन भेद न रखें। ऋषि भक्तों का मनभेद बाहरी न्यायपालिका (कोर्ट) द्वारा विरोध ऋषि विरोध जानें। समाज व राष्ट्र हानि का कारण न बनें।

- राजवीर आर्य 'वैदिक' मुरादनगर, गाजियाबाद
मोबाइल 9927203015,759923377

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सुन्दर भाव भरा हो मन में,
जनहित में होवे संघर्ष।
गले लगाती मंजिल आकर,
मिलता हर पल हर्ष।।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

# समाचार

## आर्य समाज बरमिन्घम (U.K.) के नवीन भवन का शुभारम्भ

आर्य समाज बरमिन्घम भवन को अधिगृहीत करने का निर्णय ब्रिटिश सरकार ने हाई स्पीड रेल लन्दन से बरमिन्घम तक निर्माण करने के लिए २०१७ वर्ष में लिया और आर्य समाज बरमिन्घम को किसी अन्य स्थान पर ले जाने के लिए भरपूर धन देने का आश्वासन दिया।

आर्य समाज बरमिन्घम के Board of Trustees ने एक १०० वर्ष पुराने मजबूत चर्च को आर्य समाज मन्दिर बरमिन्घम के रूप में परिवर्तित करने हेतु क्रय करने का निर्णय लिया जिसके लिए ६,८०,००० पौन्ड की राशि पुराने मन्दिर के मुआवजे के रूप में प्रदान की, और ३२१, Rookery Road हैन्ड्सवर्थ बरमिन्घम स्थित १०० वर्ष पुराने चर्च को ६,८०,००० पौंड में ही खरीदा गया। २३ अगस्त २०१७ को चर्च भवन में आवश्यक नवीनीकरण का कार्य सम्पन्न कराने के पश्चात् २१ अप्रैल २०१८ को इस नये आर्य समाज भवन का उद्घाटन भारत के राजदूत श्रीमान यशवर्धन कुमार सिन्हा के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस नये आर्य समाज भवन में ३ विशाल हाल हैं जिसमें एक का नामकरण स्वामी दयानन्द हाल, दूसरे का नामकरण श्रद्धानन्द हाल किया गया है, और तीसरा हाल यज्ञशाला के रूप में किया है। डा. नरेन्द्र कुमार, प्रधान आर्य समाज बरमिन्घम के अथक परिश्रम से नये भवन का रूपान्तर आर्य समाज मन्दिर के रूप में हो सका है। डा. नरेन्द्र कुमार जी, आर्य समाज बरमिन्घम के सभी पदाधिकारियों एवं पुरोहित आचार्य उमेश यादव को अनेकानेक बधाई व शुभकामनाएँ।

– अशोक आर्य

## आर्यसमाज अंजलि विहार, कोटा के निर्वाचन संपन्न

आर्यसमाज अंजलि विहार, कोटा के निर्वाचन श्री राजेन्द्र कुमार आर्य के निर्देशन में संपन्न हुए। सर्वसम्मिति से श्री राजेन्द्र कुमार आर्य को संरक्षक, श्रीमती ऊषा आर्या को प्रधान, श्री प्रांशु आर्य को मंत्री एवं श्रीमती पूनम आर्य को कोषाध्यक्ष के पद पर निर्वाचित किया गया। सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएँ।

## आचार्य वेदव्रत शास्त्री का निधन

स्वामी ओमानंद जी के शिष्य, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (दयानंद मठ,गोहाना रोड, रोहतक) के संस्थापक, सैंकड़ो वैदिक पुस्तकों के प्रकाशक, हरियाणा महिला आयोग की अध्यक्षा प्रतिभा सुमन के ससुर आचार्य वेदव्रत जी का निधन हो गया। उनकी आयु ८६ वर्ष की थी। आचार्य जी के निधन से आर्य समाज में शोक की लहर है। आचार्य जी की क्षति अपूरणीय है। आचार्य जी ने १९६६ में आचार्य प्रिंटिंग प्रेस प्रारम्भ करके वैदिक साहित्य के प्रचार प्रसार का कार्य शुरू किया था। उन्होंने वैदिक साहित्य में उच्चतम डिग्रियां प्राप्त की थीं। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से आचार्य जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

– भवानीदास आर्य, मन्त्री

## मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा – एक सशक्त कार्यक्रम

दक्षिण बिहार में आर्य समाज को गतिशील बनाने के लिये एवं जगतगुरू महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों एवं वेदों के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए ३१ मार्च २०११ को आर्य समाज रजौली के प्रांगण में मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा का गठन किया गया। मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा ने अपने क्षेत्र में आर्य समाज की गतिविधि को बढ़ाने के लिये डी. ए. वी., गया के डायरेक्टर सम्माननीय श्री यू.एस. प्रसाद जी के साथ मिलकर अनेक महासम्मेलनों का आयोजन किया जिसमें मगध प्रमण्डलीय आर्य महासम्मेलन २०११ नेमदारगंज, वेद सम्मेलन २०१२ आजाद पार्क गया, सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २०१३ नेमदारगंज, आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर बिहारशरीफ २०१५, आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन २०१४ डी.ए.वी. स्कूल गया, मगध प्रमण्डलीय आर्य महासम्मेलन २०१५ नेमदारगंज में धूमधाम से मनाया गया ।

इस दौरान आर्य समाजों को एक सूत्र में जोड़ने के लिए जन जागृति कार्यक्रम चलाकर हर आर्य समाजों का दौरा किया गया जिसके कारण उत्तर बिहार में आर्यजन चेतना का संचार हुआ ।

समय-समय पर आर्य विद्वतगण श्री मान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, आचार्य सोमदेव शास्त्री, आचार्य अशर्फी लाल शास्त्री, डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती, आचार्या सूर्यदेवी चतुर्वेदा एवं लब्ध प्रतिष्ठित आर्य नेता श्री आनन्द कुमार आर्य, श्री अशोक आर्य, श्री प्रकाश आर्य, श्री विनय आर्य आदि महानुभावों ने हमारा मार्गदर्शन किया।

इस सभा के संरक्षक के पद पर डॉ. यू.एस. प्रसाद, श्री बच्चू लाल आर्य-प्रधान, श्री रामप्यारे प्रसाद- मंत्री, श्री सत्योम शास्त्री-पूर्व कोषाध्यक्ष, श्री अशोक आर्य-वर्तमान कोषाध्यक्ष एवं सभा के सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों ने मिलकर ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने का सद्उद्योग किया।

– संजय सत्यार्थी, आर्योपदेशक

## समाज सेवा क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने पर डॉ. वेद प्रकाश व आचार्य अग्निमित्र शास्त्री समाज रत्न से सम्मानित

कोटा के प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता एवं वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री का जयपुर में राजस्थान जनमंच संस्था द्वारा उनके समाज सेवा में किए गए कार्यों के लिए ‘समाज रत्न’ से सम्मानित किया गया। राजस्थान चेंबर ऑफ कॉमर्स के

मोहनलाल सुखाड़िया ऑडिटोरियम में राजस्थान जनमंच संस्था द्वारा भव्य समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर कोटा के डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता एवं आर्य समाज के वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री को माला पहनाकर, केसरिया दुपट्टा व राजस्थानी प्रिंटेड केसरिया पटका पहनाकर स्वागत किया गया, साथ ही स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उपस्थितजनों के समक्ष डॉ वेदप्रकाश एवं आचार्य शास्त्री द्वारा किए गए विशेष कार्यों का विस्तृत विवरण पढ़कर सुनाया गया। कार्यक्रम में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उपप्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा भी उपस्थित रहे।

– अर्जुनदेव चड्ढा

### सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का हिंदी में अनुवाद

सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का जल्द ही हिंदी में भी अनुवाद किया जाएगा। मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने कहा कि हम चाहते हैं कि जो फैसले सुप्रीम कोर्ट देता है वह वादी के समझ में आना चाहिए। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि मान लीजिए कोई व्यक्ति ३० साल तक मुकदमा लड़ता है और उसके बाद अंग्रेजी में आए फैसले में उसे घर-संपत्ति से बेदखल कर दिया जाता है। अगर वह अंग्रेजी में दिए इस फैसले को पढ़ नहीं सकता और उसका वकील भी समय के अभाव में उसे पूरा फैसला समझाता नहीं है या फिर इसके लिए पैसे की मांग करता है तो यह स्थिति ठीक नहीं है।

जस्टिस गोगोई ने कहा कि हम अगर फैसले का उसकी भाषा में अनुवाद करवा देंगे तो उसे समझने में आसानी होगी। जस्टिस गोगोई ने कहा कि हम यह प्रोजेक्ट जल्द शुरू करेंगे, पहले यह हिंदी में होगा। उसके बाद इसे क्षेत्रीय भाषाओं में शुरू किया जाएगा। जस्टिस गोगोई ने कहा कि प्रमुख फैसलों का संक्षिप्त रूप भी उपलब्ध करवाने पर बात हो रही है। जैसे ट्रिपल तलाक का फैसला चार सौ पन्नों में था लेकिन इसकी समरी कुछ पन्नों में ही बन सकती है। इसके लिए थिंक टैंक बनाया गया है जो यह काम करेगा। फैसलों की समरी को फैसला देने वाले जजों की मंजूरी के बाद ही सार्वजनिक किया जाएगा।

### संस्कार विधि पर आधारित टेलीविजन धारावाहिक लिखवाने का निर्णय

आर्य समाज कलकत्ता ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित पुस्तक 'संस्कार विधि' पर टी.वी. के लिए एक धारावाहिक लिखवाने का निर्णय लिया है, जिससे हमारी युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताये गए संस्कारों की सही-सही जानकारी हो सके। जो भी विद्वान् या विद्वानों का समूह 'संस्कार विधि' पर धारावाहिक लिखने को इच्छुक हैं, वे सभी विद्वान् आर्य समाज कलकत्ता से सम्पर्क करें। धारावाहिक में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गये सिद्धांतों को मनोंरजक ढंग से दिखाया जायेगा जिससे यह सभी उम्र के लोगों के लिए रुचिकर हो। सिद्धांतों से किसी प्रकार का समझौता नहीं होगा। सभी संस्कार विस्तृत रूप में शंका समाधान सहित लिखे जाएं। धारावाहिक १०८ कड़ियों या इससे अधिक का हो। इस धारावाहिक पर आर्य जगत् के ५ विद्वानों की समिति इसका निर्णय लेगी। सभी विद्वानों को वर्तमान समयानुसार पारिश्रमिक दिया जायेगा। इस धारावाहिक पर आर्य समाज कलकत्ता का सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा। कॉपी राईट भी आर्य समाज कलकत्ता का ही होगा।

सम्पर्क- सुरेश कुमार अग्रवाल- ८२४०२४११७८, ९८३१८४७७९८

– मदनलाल सेठ, आर्य समाज कलकत्ता

### गुरुकुल गौतम नगर में प्रतियोगिताएं संपन्न

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा प्रायोजित एवम् श्रीमद् दयानंद वैदिक गुरुकुल परिषद् के द्वारा ८ एवं ९ दिसम्बर को आयोजित 'वैदिक सिद्धांत प्रश्नमंच.. अष्टाध्यायी कण्ठपाठ एवं लेखन.. धातुपाठ कण्ठपाठ एवं लेखन ..वाद विवाद ..एवं त्रिभाषी कोष कण्ठ' इत्यादि प्रतियोगिताओं का गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में सफलता पूर्वक आयोजन हुवा जिसमें लगभग ३० गुरुकुलों के १५०के आसपास छात्र छात्राओं ने बहुत उत्साह से भाग लिया। ९ दिसंबर को स्वामी प्रणवानंद जी सरस्वती एवम् मानव सेवा प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी ने अपने कर कमलों से पारितोषिक वितरित किए। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन आचार्य धनंजय जी एवं शिवदेव शास्त्री द्वारा किया गया।

### श्री भुवनेश जी जोशी का निधन

अत्यंत शोक का विषय है कि उदयपुर-आर्यजगत् के वरिष्ठ सदस्य, निष्ठावान आर्य, आर्यसमाज सज्जननगर के मंत्री श्री हिमांग जोशी के पिता श्री भुवनेश जी जोशी का, एक संक्षिप्त बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। वे प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी आर्यसमाजों एवं न्यास के सभी कार्यक्रमों में रुचिपूर्वक सहधर्मिणी सहित भाग लेते थे। श्री जोशी अत्यंत स्वाध्यायशील थे।'सत्यार्थ सौरभ' के नियमित पाठक थे। हम उदयपुर के आर्यजन उनके जाने से रिक्तता का अनुभव कर रहे हैं। परन्तु यह विधाता की अटल व्यवस्था है, इसके समक्ष सबको नतमस्तक होना पड़ता है। प्रसन्नता की बात यह है कि उन्होंने अपने पुत्र को भी वैदिक विचारधारा से संपृक्त किया है और प्रिय हिमांग आर्यसमाज सज्जन नगर के मंत्री के रूप में अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभा रहे हैं। हम सभी आर्यजन जोशी परिवार के इस दुःख में उनके साथ हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत परिवार को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

-भवानीदास आर्य , मंत्री न्यास

### सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १०/१८ के विजेता

श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; अशोक विहार (दिल्ली), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; भोपाल (म.प्र.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), श्री रामप्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ.प्र.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), परमजीत कौर, नारायण विहार (नई दिल्ली), श्री किशनाराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजयनगर (इन्दौर, म.प्र.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; सैनिक विहार (दिल्ली), ज्योति कुमारी; महेन्द्रगढ (हरियाणा), प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी; बीकानेर (राज.), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री पं. मूलचन्द वशिष्ठ; नूह (हरियाणा)

### सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११/१८ के विजेता

श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), जीवन लाल आर्य; अशोक विहार, दिल्ली, श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्रीमती परमजीत कौर; नारायण विहार (नई दिल्ली), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री किशनाराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), ज्योति कुमारी; महेन्द्रगढ (हरियाणा), प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री रामदत्त आर्य; धौलपुर (राज.), श्री पं. मूलचद वशिष्ठ (गोल्ड रत्न); नूह (हरियाणा), श्री बाबूलाल आर्य; मन्दसौर (म.प्र.), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री गणेश दत्त गोयल; बुलन्दशहर (उ.प्र.), देवेन्द्र कुमार; (डॉ.) भीलवाड़ा (राज.) श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

**ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १९ पर अवश्य पढ़ें।**

# अब रामद्रोही भी लौटने लगे हैं श्रीराम मंदिर की ओर !!

– विनोद बंसल

अयोध्या में भगवान श्री राम की जन्म भूमि पर भव्य मंदिर बने, इस बात को अब सभी कहने लगे हैं। चाहे कोई राजनेता हो या समाज शास्त्री, हिन्दू हो या मुसलमान। वह अलग बात है कि कुछ लोग यह डंके की चोट पर कहते हैं तो कुछ दबी जुबान में, कुछ को सिर्फ दिखावे के लिए बोलना पड़ता है, तो कुछ दिल से। किसी को इसमें उनका राजनैतिक हित सधता नजर आता है तो कोई सिर्फ यह देखने हेतु कह बैठता है कि देखें इसके लोग क्या अर्थ लगाते हैं। कोई सीधे राम मंदिर की बात न कर, मंदिर आन्दोलन से जुड़े पूज्य संतों की शरण में जाने का, तो कोई किसी अन्य मंदिर की बात कर हिन्दू समाज का हितैषी दिखने का नाटक करने लगा है।

अभी हाल ही में एक ऐसे राजनैतिक दल ने, कंबोडिया के विश्व प्रसिद्ध अंकोरवाट मन्दिर की तर्ज पर, उत्तर प्रदेश में एक भव्य विष्णु मंदिर बनाने का चुनावी शगूफा छेड़ दिया है, जिसे अयोध्या में असंख्य निहत्थे राम-भक्तों पर गोली चलवाकर दर्जनों की हत्या में भी गर्व का अनुभव होता है। इतना ही नहीं, चाहे सिर्फ टीवी चेनलों की बहसों में ही सही, अब तो वे लोग भी राम मंदिर का समर्थन करते हुए देखे जा रहे हैं, जो सर्वोच्च न्यायालय में श्री रामलला के विरोध में खड़े हैं।

विचारणीय विषय यह है कि जो अब तक सैक्यूलरवाद का लबादा ओढे अयोध्या में श्रीराम जी के मंदिर के विरोध में बंदूक ताने खड़े होते थे, किसी मंदिर, संत या हिन्दू हित की बात करने को ही साम्प्रदायिक मानते थे, यदि कोई राजनेता भगवा वस्त्र धारण करता या माथे पर तिलक, चन्दन या टीका धारण करते हुए दिखता था तो स्पष्ट तौर पर वह सैक्यूलर नहीं माना जाता था, आज ये सब चाहे दिखावे को ही सही, क्यों बदले-बदले से नजर आ रहे हैं। ऐसी मानसिकता के लोग भी अब न सिर्फ बड़े बड़े टीके व भगवा वस्त्र धारण करने लगे हैं बल्कि, अपने जनेऊ का भी प्रदर्शन कर मंदिरों में फोटो खिंचवाने व उसे अखबारों टीवी चैनलों में चलवाने लगे हैं। हिन्दू धार्मिक यात्राओं के स्वागतार्थ बड़े-बड़े होर्डिंग अब सैक्यूलर नेता भी अपने फोटो के साथ लगाने लगे हैं। आखिर कहाँ गईं वे तस्वीरें जो हम अपने बचपन से अखबारों के मुख पृष्ठ में देखते आ रहे थे कि नेताजी चाहे हिन्दू हों या मुसलमान, सबके सिर पर जालीदार गोल टोपी तथा कंधे पर हरा गमछा है...

हालांकि, इन वक्तव्यों या दिखावे की राजनीति से अयोध्या में जन्मस्थली पर भव्य मंदिर निर्माण आसान हो जाएगा, ऐसा नहीं है। हाँ इतना है कि राजनेता अब यह बात स्पष्ट तौर पर कहने लगे हैं कि मंदिर का रास्ता न्यायालय या संसद से ही निकलेगा और इसे वर्तमान सत्ताधारी राजनैतिक दल को ही निकालना चाहिए। उसे संसद में प्रस्ताव लाकर मंदिर का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। किन्तु उन्हीं राजनेताओं से जब

ऐसे संसदीय प्रस्ताव के समर्थन के बारे में पूछा जाता है तो वे दाएं बाएँ देखने लग जाते हैं। गत कुछ महीनों से तो राम मंदिर के मामले पर होने वाली टीवी की बहसों में प्रमुख विपक्षी दलों ने अपने प्रवक्ताओं को भी भेजने से किनारा कर लिया है। क्योंकि उनकी दुविधा यह है कि जो दशकों से, स्पष्ट तौर पर, राम-मंदिर को साम्प्रदायिक मुद्दा कह कर, विरोध करते आए हैं, अब किस मुंह से उसका समर्थन करें। और, यदि उसका विरोध करते हैं तो, अपनी सुषुप्तावस्था से उठ खडे हुए हिन्दू समाज को अब क्या मुंह दिखाएंगे? दूसरा, अब उनकी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का क्या होगा?

गत ४६० वर्षों के अनथक संघर्षों में ३.५ लाख रामभक्तों के बलिदान तथा सत्तर से अधिक वर्षों की सतत कानूनी लड़ाई के बाद अब यह दिखने लगा है कि इस मामले का समाधान भी अब सन्निकट ही है। आगामी दो माह इस मामले में मील के पत्थर साबित हो सकते हैं। अभी तो सभी की निगाहें माननीय सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पर टिकी हैं जो इसके त्वरित गति से समाधान करने के पक्ष में हैं।(वे अब सेवानिवृत हो चुके हैं) किन्तु, जैसा कि गत ६ महीनों से देखने को मिल रहा है, उच्चतम न्यायालय के कार्य में, कांग्रेस व अन्य सैक्यूलरिस्ट रामद्रोहियों की 'शाउटिंग ब्रिगेड', एक के बाद एक, रोड़ा अटकाकर मामले को टालने में जी-जान से लगी है, दूसरे विकल्प पर भी विचार करना ही होगा। वैसे उसकी राह के कंकड़ भी सड़क किनारे लगने लगे हैं। अब वह दिन दूर नहीं कि या तो सर्वोच्च अदालत या फिर सभी सांसदों की सामूहिक शक्ति के द्वारा आपसी मतभेद व राजनैतिक स्वार्थ भुलाकर वर्तमान संसद, टाट के टेन्ट से श्री रामलला को एक भव्य मंदिर में पुनः प्रतिष्ठित करेगी।

वास्तव में यह मामला हिन्दू-मुसलमान के बीच का न होकर राष्ट्रीयता व राष्ट्रीय स्वाभिमान से जुड़ा है। बाबर जैसे विदेशी लुटेरे, पापी व अत्याचारी या उसके द्वारा बनाए बाबरी ढाँचे से क्या किसी भारतीय स्वाभिमानी समुदाय को जोड़ा जा सकता है? भारत का संविधान, जिसके प्रथम पृष्ठ पर भगवान श्रीराम का दरबार छपा हो, उसकी जन्मभूमि पर पहले से विद्यमान मंदिर की सिर्फ भव्यता का विरोध, क्या देश के संविधान व उसकी पुरातन संस्कृति का विरोध नहीं? चाहे छुप-छुप कर ही सही, अपनी जली हुई लंका को छोड़, रामद्रोही भी अब अयोध्या की ओर लौटते हुए नजर आ रहे हैं।

- 329, द्वितीय तल, सन्त नगर,
पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली- 65

**श्री दीपचंद जी आर्य, कीरतपुर का निधन**

आर्य जगत् के प्रसिद्ध आर्य श्रेष्ठी, निष्ठावान आर्य, अपने सम्पूर्ण परिवार को वैदिक संस्कारों से सिंचित करने वाले, सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका ( उदयपुर) के संरक्षक सदस्य, कीरतपुर (बिजनौर) निवासी, हमारे संबंधी श्री दीपचंद जी आर्य का ६० वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। हम शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना ज्ञापित करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

**श्री राम सिंह जी आर्य , जोधपुर की माता श्री का निधन**

जोधपुर के आर्य नेता श्री राम सिंह आर्य की माताश्री एवं जोधपुर विधायक मनीषा जी पंवार की दादीजी का ६० वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। हम शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना ज्ञापित करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें। - अशोक आर्य

**विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार**

Very erudite and scholary discourse by Shambhulal (Guide of Aryavart gallery situated at Navlakha Mahal, Udaipur, while narrating the pictures of gallary). Instead of going to the rose garden (Gulab Bagh), children should be compulsarily made to attend discourse at Aryavart Gallary.

**- Neeraj.B.Bapat, UK, (at present Mumbai)**

♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣♣

Very nicely explained by guide. I have heared about Dayanand ji but today I am satisfied after this visit. **- Ms. Krupa, Judge-Education tribunal, Ahmedabad**

# सुहानी सर्दी

# स्वास्थ्य

सर्दी अपनी दस्तक दे चुकी है। इस मौसम में स्वास्थ्य की हिम्मत भी अक्सर जवाब दे जाती है। थोड़ी सी लापरवाही, और कई दफा पूरा ध्यान रखने के बावजूद भी, हम शिकार हो जाते हैं बहती हुई नाक, खांसी, छींकें, कई तरह के संक्रमण इत्यादि, और ना जाने कितने इस प्रकार के शिकारियों के।

कुछ समस्याएं भले ही हों लेकिन सर्दी का मौसम बहुत से लोगों को पसंद होता है । खासकर खाने के शौकीनों को । सर्दी के मौसम में पाचन शक्ति बढ़ जाती है। सो भोजन प्रेमी इस मौसम का खूब लुत्फ उठाते हैं। गरमा गर्म परोंठे, दाल के पकौड़े और अदरक इलायची वाली चाय की दावतें उड़ाते ही रहते हैं ।

सर्दी का मौसम खाने पीने का सबसे बढ़िया मौसम होता है, इसलिए इस मौसम का आप भी फायदा उठायें, और अपना खानपान कुछ ऐसा सुनिश्चित करें कि सर्दी नामक ये तोप आपका कुछ ना बिगाड़ पाये।

सबसे पहले अपने खाने के मेनू में वो चीजें शामिल करें जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायता करे। इसके लिए प्रोटीन, विटामिन से भरपूर फलों का प्रयोग करें। हर जगह आसानी से उपलब्ध गाजर, सेब, संतरे इत्यादि अपने रोज के भोजन में शामिल करें और नियमित रूप से खाएं।

सर्दियों में प्यास कम ही लगती है, लेकिन आप जानते हैं कि मानव शरीर को पानी की आवश्यकता बहुत ज्यादा होती है, इसलिए कम से कम २ लिटर पानी किसी भी रूप में जरूर पियें, इस जरूरत को आप गर्म सूप या जूस एवं रसदार फलों के माध्यम से भी पूरा कर सकते हैं ।

अस्थमा यानि दमे के रोगी इस मौसम में अपना विशेष ख्याल रखें। क्योंकि इस मौसम में सांस से सम्बंधित परेशानियां अक्सर स्वस्थ व्यक्तियों को भी सताती रहती हैं, ऐसे में अगर किसी को अस्थमा है तो दिक्कतें बढ़ सकती हैं। इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति को चाहिए कि वो सर्दियों में अपने चेहरे को ढक के रखें। विशेषतया अगर घर से बाहर जा रहे हों तो । धुंए के संपर्क में आने से बचें।

ठण्ड से बचने के लिए गर्म कपड़े तो आपने निकाल ही लिए होंगे, उनका सम्पूर्ण उपयोग करें । ध्यान रहे, सर्दियों में शरीर का तपमान बढ़ाने हेतु हमारा हृदय बहुत मेहनत करता है। और तापमान कम हो तो रक्तचाप भी बढ़ जाता है, अतः अपने हृदय की सहायता के लिए अपने शरीर को गर्म रखें । अच्छा पौष्टिक खाना खाएं और कुछ व्यायाम वगैरह भी करलें तो बेचारे दिल का भला हो जायेगा । आखिर वो भी आपका अपना ही है ।

सर्दियों में एक और आम समस्या है फ्लू । इसके जीवाणु ठण्ड के मौसम में ज्यादा सक्रिय हो जाते हैं और जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है उनको ये जीवाणु जकड़ लेते हैं । इसलिए हर हाल में सेहतमंद भोजन के अलावा अपने आप को ठण्ड से बचा कर रखें और शरीर को गर्म रखें।

ऐसा ना सोचें कि सारा खाया पीया आसानी से पच रहा है तो खाते ही रहें । जी नहीं, संतुलित खाना ही खाएं और पौष्टिक तत्वों से भरपूर। क्योंकि ये भी तो सच है कि ज्यादा खाएंगे तो मोटापा भी बढ़ेगा ।

इसके अलावा सुकून और शांति भरी नींद लें। कम से कम आठ घंटे की नींद हो तो कहना ही क्या । अगर पूरी नींद ली जाए तो वो भी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने में काफी मदद करती है । और एक बात, नहाने के लिए गर्म पानी बहुत ज्यादा गर्म नहीं हो इसका भी ध्यान रखें ।

अब चलते-चलते एक मजाकिया लेकिन काम की बात, 'हाथ मिलाने की बजाय नमस्ते का प्रयोग ज्यादा करें, क्या पता सामने वाले ने नाक साफ करके हाथ धोये भी हैं या नहीं।' इससे संक्रमण की सम्भावना से भी बचा जा सकता है ।

साभार- अंतर्जाल

# जीवन चक्र

**कथा सरिता**

शहर की सुन्दर सी कालोनी में मलिक साहेब की बड़ी सी कोठी थी और उस कोठी में अमलतास का एक बहुत बड़ा हरा भरा और सुन्दर सा पेड़ था ! उस पेड़ पर एक प्यारी सी बया रहती थी ! बया रानी दिन भर मेहनत करती ! अमलतास के पेड़ पर अपना खूबसूरत घरौंदा बनाने के लिये अनगिनत घास पत्ते और तिनकों में से चुन-चुन कर सबसे बेहतरीन तिनके वह बटोर कर लाती ! अंदर से उसे इतना मुलायम, चिकना और आरामदेह बना देती कि उसके सुकुमार अण्डों को कोई नुक्सान न पहुँचे और उसके नन्हे-नन्हे चूजे एकदम सुरक्षित माहौल में इस संसार में अपनी आँखें खोल सकें ! कड़ी मेहनत से बनाया हुआ उसका घोंसला लगभग तैयार हो चुका था ! आज वह आखिरी चंद तिनके अपनी चोंच में दबा कर लाई थी कि अपने घोंसले को अंतिम रूप दे सके ! संध्या के समय श्रांत क्लांत जब वह अमलतास तक आई तो उसके दुःख का कोई पारावार न था ! दुष्ट बन्दर ने उसका मेहनत से बनाया हुआ खूबसूरत घोंसला तिनका-तिनका बिखेर कर जमीन पर फेंक दिया था !

सारी रात बया दुःख में डूबी रही लेकिन सुबह होते-होते उसने किसी तरह सब्र कर लिया ! जीवन गीत गुनगुनाते हुए अगले दिन से नीड़ के निर्माण के लिये तिनके जोड़ने का बया का सिलसिला एक बार फिर नये सिरे से आरम्भ हुआ ! कमर कस कर बया ने फिर से तिनके बटोरना शुरू किये और एक बार फिर कड़ी मेहनत कर अपना घोंसला दोबारा तैयार कर लिया ! लेकिन कहते हैं ना – 'अपने मन कछु और है कर्ता के कछु और !' इस बार घर के मालिक मलिक साहेब ने पेड़ को सुन्दर आकार देने के लिये कुछ डालियाँ कटवा दीं और उन डालियों के साथ बया का घोंसला भी कूड़े के ढेर पर पहुँच गया !

इस बार बया ने अमलतास के सघन हिस्से में अपना घोंसला बनाने का निश्चय किया ताकि उसे कोई देख न पाए और वह अपने अंडे उस घोंसले में निश्चिन्त होकर दे सके ! रोज चहचहाते गीत गुनगुनाते वह फिर से नये जोश के साथ घोंसला बनाने में जुट गयी ! ईश्वर का धन्यवाद कि इस बार उसका घोंसला भी ठीक से बन गया और उसके अंडे भी उसमें सुरक्षित बच गये ! अब बया को नयी चुनौती का सामना करना था ! उसे अपने चूजों की रक्षा कौओं, बिल्ली, बन्दर और चील से करनी थी ! उसे रोज उनके लिये दाना खोज कर लाना होता था और उन्हें सबकी नजर से बचा कर धीरे-धीरे उड़ना भी सिखाना होता था ! बया दिन भर मेहनत करती ! कभी बच्चों की चोंच में दाना डाल उन्हें खाना खिलाती ! कभी दुष्ट कौए और चील को घोंसले के करीब आते देख खदेड़ कर भगाती तो कभी बन्दर और बिल्ली से पंगा लेकर अपने बच्चों की

हिफाजत करती ! लेकिन सुबह शाम बहुत तल्लीन होकर वह अपना जीवन गीत जरूर गाती और अपने बच्चों को भी खूब दुलारती !

बच्चे अब बड़े हो गये थे ! बया रानी रोज की तरह अपने बच्चों के लिये दाना लाने गयी थी ! शाम को जब वह अपने घर लौटी तो घोंसला खाली था ! उसके सारे बच्चे उड़ गये थे अपने हिस्से का आसमान ढूँढने के लिये ! बया हतप्रभ थी, उदास थी, दुखी थी और बिलकुल अकेली थी ! आशंका थी इस बार बया यह सदमा झेल नहीं पायेगी लेकिन अगली सुबह उसके घरौंदे से रोज की तरह फिर से उसी मीठी आवाज में जीवन गीत की मधुर ध्वनि सुनाई दे रही थी ! जितनी सहजता से निस्पृह होकर ये पंछी अपने इस जीवन चक्र को आत्मसात कर लेते हैं हम मानव क्यों नहीं कर पाते ?

–साधना वैद

सत्यार्थ-पीयूष

# सुख-दुःख का होना ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण

जगत् में सुख दुःख का होनाः- ईश्वर का एक और कार्य है वह है जीव को उसके कर्मानुसार फल प्रदान करना। आप विचार करेंगे तो पायेंगे कि लोक में कोई भी दुःख नहीं पाना चाहता। प्रत्येक व्यक्ति सर्व प्रकार की सम्पन्नता चाहता है। फिर क्या कारण है कि अनेक, जन्म से ही निर्धन, लूले लंगड़े, अन्धे तथा अन्य प्रकार से क्षमता विहीन होते हैं? किसी जेल में जाइये। कैदी लोग अन्दर बन्द क्यों हैं? क्या स्वेच्छा से? कदापि नहीं। उनकी चले तो येन केन प्रकारेण स्वतंत्र हो जायें। पर राज्य व्यवस्था उन्हें ऐसा न करने देकर अराजकता को दूर करती है। उसी प्रकार प्रभु भी शुभ-अशुभ कर्म करने वाले जीवों को सुख-दुःख प्रदान करता है। जिस प्रकार इच्छा न होते हुए भी बुरे कार्य का फल भुगतने हेतु मनुष्य कैद में है यह बात राज्य व्यवस्था अथवा राजा/शासक के अस्तित्व की द्योतक है उसी प्रकार जगत् में सुख-दुःख की व्यवस्था जो कि जीव के अपने पुण्य-पाप के अनुसार है ईश्वर की सत्ता की द्योतक है, क्योंकि इसी कारण जीव फल भोगने को बाध्य है। ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि शेषवत् (अनुमान) अर्थात् जहाँ कार्य को देख के कारण का ज्ञान हो। जैसे नदी के प्रवाह की बढ़ती को देख के ऊपर हुई वर्षा का, पुत्र को देखके पिता का, सृष्टि को देख के अनादि कारण का तथा कर्त्ता ईश्वर का, और सुख-दुःख को देख के पाप-पुण्य के आचरण का ज्ञान होता है, इसी को शेषवत् (अनुमान) कहते हैं।' (सत्यार्थ प्रकाश-तृतीय समुल्लास)।

यह शेषवत् अनुमान ईश्वर सिद्धि में घटता है।

### अन्तरात्मा की आवाज-

अन्तरात्मा की आवाज भी ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है क्योंकि यह प्रेरणा ईश्वरीय होती है परमात्मा की ओर से होती है। प्रत्येक मनुष्य इस बात को अनुभव करता है कि जब भी किसी बुरे कार्य में प्रवृत्ति होती है तो मन में भय, संकोच, लज्जा आदि उत्पन्न होते हैं और जब भी वह अच्छे कार्य में लगता है तो उत्साह आदि अनुभव करता है। हम अपने स्वार्थ, लोभ, हठ आदि के वशीभूत हो भले ही इस आवाज को अनसुनी कर दें पर परमात्मा की यह आवाज हमें सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा अवश्य देती है।

ऋषि लिखते हैं- 'और जब आत्मा मन और इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता, उस समय जीव की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाते हैं। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है।

क्रमशः......

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग


## सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

| राशि | प्रतियों की संख्या | राशि | प्रतियों की संख्या |
|---|---|---|---|
| १५०००० | दस हजार | ११२५०० | ७५०० |
| ७५००० | ५००० | ३७५०० | २५०० |
| १५००० | १००० | इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे। | |

**आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा।** राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास


## श्री अर्जुनदेव चड्ढा का अमृत महोत्सव

१३ जनवरी २०१६ को जिला आर्य सभा, कोटा के प्रधान व कर्मठ आर्य नेता श्री अर्जुनदेव चड्ढा की ७५ वीं वर्षगांठ पर कोटा में अमृत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस मंगल अवसर पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार के सदस्य प्रभु से उनके निरामय दीर्घायुष्य की प्रार्थना करते हैं। वे सुखी रहें, स्वस्थ रहें तथा आर्य समाज के कार्य में इसी प्रकार सर्वात्मना जुटे रहें यही कामना है।

- अशोक आर्य

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरूरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर